

Acc No. > 51129

बाल विविक्त

25/5/55

(भाषा)



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय





ननकरजाय सोअकारविधसैकहोहृत्त  
 अलताहावाय धन्वंतरउवाच जो० प्रप  
 ममासवेदनजोहोई गर्भअलउपजैतांहा  
 होई ताकिअथदकहुविचार तातैसुख  
 पावेपरनार गिरुकवलगदेकील्यान ता  
 समचंदनआतामिलान होरप्रियंगुफल  
 विचार तासमखसजोदिजोडार केशरना  
 गडारसमलोय अजेजलसोरगडोसोय का  
 ठाकरोदुधमैपाय फेरनारिकोदेहिपिलाय  
 प्रपममासकाअलनसाय वैद्यधन्वंतरादे  
 योभताय १ रंभाउवाच दो० दुतीयमासकि  
 वेदनाजोनारितनहोय अवउपायताकेक



होमहाअतिसुखहोय धन्यंतरउवाच चो०  
 दुतीयमासनारिहोमेय ताकाकहंशकलसु  
 नभेय ताकिओयदसुनोउपाय गर्भपोडता  
 तैमिटजाय कवलफलमासादोत्पाय ताम्र  
 मबीजकवलकापाय भंगरेकारसकेशरत्ना  
 न सीतलपाणिमैपिसवाच दुधपित्तायपि  
 वैजोनार गर्भफलकोदुखविवार रेभाउ  
 वाच रदो० तृतीयमासलक्षणकहोदेखा  
 मिअतिशान फलहोतजवनारकैहोतग  
 भकिहान धन्यंतरउवाचः चो० गर्भमासती  
 जेहोनार ताकेलक्षणसुनोविचार नरनत  
 हुंओयदकेनाम गर्भफलतेपावैअरासः ।



मासादोयकशंभात्प्राच आनसेवतीविचर  
 लान केशरतामैदेहमिताय जानलधोवण  
 सैपिसवाय फेरदुधमैदेतमित्ताय गर्भबौन  
 कोटिजैप्पाय सकलतिसत्तैमित्ताय मुनि  
 जनआयददियोभत्ताय ३ रेभाउवाच दो०  
 मासचतुर्थक निचमैश्रुतहोतमधधामः  
 ताउपाचवरननकरोतिश्रैमनअभिरामः  
 धन्वेतरउवाचः सवेया मासचतुर्थकेलक्ष  
 णरोगकहंतुमकोसमफाई रोगघटैहोरपी  
 डमिटैसुखहोतशरीरकरोजोउपाई गर्भप्य  
 भैतगिरतीरियाको जवतारसमेपरऔयद  
 खाई औयदताकिआपसुनोसभसोईक



गेनुमैदेत भताई दो० दुग्धगडका आनकेसी  
 तलनीरमिलाय जडकेलेकीपीसकेनालिक  
 बलमिलाय दुग्धसंगसैरगडकेसुखसौपी  
 बैनार अतिसुखहोवैफलकोयेमन आप  
 विचार ५ रेभाडवान दो० मासपांचवौजव  
 लगेनारितनहोफलः ताउपाववरननकरो  
 ग्रंथनकेअनकल धन्नेतरडवान सोरा  
 मासपांचवौआनलगत जानजवनारकोहो  
 तगर्भकीहान फलउठतजवनारकैविनि  
 धर्भोतपरवान औषदअमलसुभावसमः  
 तदाणकहंनियत जोसमैगुनिजनशक  
 तहोतरोगकीहान दो० कवलनालिकोआ



नकैकैकोलामिरचसंगआन सीतलजलमैः  
पीसकैदुग्धामिलावैजान तुरतपित्तावैनार  
कोतिश्वैमनचित्ताय गर्भफलताकामिदै  
धन्वंतरायेयोभताय ५ रंभाउवाचः लक्ष्म  
षष्टममासकेकहोविचारविचार गर्भफल  
तनकोमिदैसुखपावैजोनार धन्वंतरउवाच  
छठामासनारिजवहोय गर्भफलताहाउपजै  
सोय महाकष्टवाधाअतिभार अवताकाः  
सुनियोउपगार पलपलासकेबीजमेगायः  
तासमकेशरआतमिलाय कनलबीजसंग  
मिरचात्पाव सीतलजलमैतापिसवाव गे  
रदुग्धपीवैजोनार सुखपावैजोसुनोविचार  
ई रंभाउवाच दो माससातवांनारिकोलगैः



वा०  
४

सुनोपियामनलाय गर्भश्रुतवेदनउटैताको  
कहोउपाय धनंतरउवाचः चो० सप्तमासना  
रिहोजाय गर्भपीडताह्यधिकसुहाय महा  
कष्टपावैजोनार तासुखकारणयेउपगारकौ  
चगिरुजामनजडल्पाय मिसरितासप्तहोरमि  
लाय रातमितासीतलजलपीस दुग्धसंगपी  
वैयोगीस पीवैनारिसभदुखनसाय गर्भश्रुत  
हितमैमिटजाय ७ रंभाउवाच मासआठवा  
जबलगैनारितनहोश्रुत तातनपीडागर्भ  
कीमहाव्याधकोसुल धनंतरउवाच चो०  
मासआठवाजबनुजान गर्भश्रुततीयकोप  
रवान ताओषट् जोकरैविचार गर्भवातसु  
षपावैनार गजपीपलऔरधनीयात्यायः

रामः  
४



मास्नातामधगेरमित्ताय सीतलजलसेंगेरैताह  
 दुग्धमांहीजोदेतमित्ताय ताकोपीचनारसुखहो  
 य यामैनाहकुहरहालकोय ८ रंभाउवाच चो०  
 नवमेमासकाकहोअमाणा सुखदुःखकारणाअ  
 नुमान गर्भशूलनारितनहोय ताविधकरउपा  
 नकहोसोय धन्वेतरउवाच नौमेमासकासुणोअ  
 माणा लक्षणरोगकहुउतमान जासेसुखपावैध  
 रनार सकलरोगकोकहुविचार शूलमितैव्याधा  
 मितजाय अवताकोसैकहुउपाय दो० कनलवी  
 जमिरचासहितसतावरीवीजमित्ताय पीसैजलक  
 रउष्मसोतामैदुग्धजोपाय जोपीवैसुखनारकोहो  
 तमहाआनेद गर्भशूलपीडामितैहटैदददुखदंद



बा०  
५

२१ रंभाउवाच दशवें मास की वेदना महादुख  
को धामः फलपका आसत न जनन तक हो सक  
लगुन नोन ३ धन्वंतर उवाच दशवा मास ल  
जै नारको रोग न व्यापै कोय बाल कहो ने की स  
मो दशवें से धि होय दशवा मास बरत तक रुं  
सकल महा सुख मूल चो० सिर सों सिर न सहत  
समपाय कवल जोग दे ताहि मिलाय सम कर दु  
ध संग जो पीव व्याध मिदै सुख पावै जीव गर्भ में  
भै जो करै उपाय वैद्य धन्वंतर दिखो भताय १०३  
ति दश मास गर्भ में चिकित्सा संपणम् अथ बाल  
क उत्पत्ति दश दिन चिकित्सा बालि संयुक्त प्रमाण  
रंभाउवाच दो० कहो अथ मदिन को शिशु य

२  
अथाः

रामः  
५



सतपत्तनाश्राय क्याक्यालछनरोगकेकहोहमै  
समजाय धन्वेतरडवाच असतपत्तनाश्रानके  
धन्वनीतामकहात महाकशदेवातकोमहाए  
तनाजात निदान बालकदुधीतापीवैगरदन  
कसरफिराय बहतरातमुखसैगीरैरोगसुनाउं  
आय अवताकोलेपनकहुलेपकरावैआय  
पुनरानकराइयेगुस्जरननचितलाय औष  
द लोदमजीठमैगायकैतामैतगरमित्ताय बा  
लकअंगलगायकैदेस्तानकराय बालकसुख  
पावैसकल तनकोरोगतसाय फेरदुःखपावैत  
हीजोकरैसमऊउपाय बलीमछीमधुरादुग्धले  
गुडसमताहिसित्ताय बलीजोदिजैप्रातउठस



बा०  
६

क

जो

राम  
६

भयोडासिट जाय मेवः ओं नमो भगवतो धन्यवती  
नाम देवी इदं वलिं गृह्य गृह्य वालकं मुंच मुंचः  
स्वाहा १ इति प्रथम रात्रि रंभा उवाच दो० बाल  
क रोग निदान सुख तु मचर नो मम इश इतीये  
रात्र मै पतना कहो नाम जोगीस धन्यतर उवा  
च चो० इतीये रात्र जो वालक कहोई तां प्र सत  
एतना सोई भीषणी नाम पतना जान गृह्य क  
रै बालक को आन निदान सुकत बाल उई होखो  
स न करी सम हो मृज प्रकास रुदन करै लेनैन  
मिजाय असत योगनी ताको आय ताको लेप  
करै तत काल औषद कहु जो समै हात बली  
दी जीये ताप प्प्रात् जव कुछु बालक आनै हा



पंचगव्यसैंकरोरसान मेअष्टेगञ्जकरतनञ्ज  
 न ताकिधूपदेयतीसवार बालककोगताहिति  
 वार बली ध्वजापताकातंदुलसाय पीतपुष्प  
 ताहोदीजेपाय सातलौंगकेशरसमकरै मृत्त  
 यपात्रमायेतिहाधरै दक्षिणादिशाबलीदेजा  
 य सभवालककोगतसाय रश्मिद्वितीयरा  
 त्रि रेभाउवाच चो० तीतरात्रजववालकजान  
 कसोसभीदेशप्रमान कौनपूतनागृस्तहैवा  
 ल ताकोनामकसोदरहाल धन्वेतरउवाच ।  
 तीतरात्रजववालकसोई गृस्तपूतनाताको  
 सोई कंकोलीहैताकोनाम ताहिराक्षसीकरै  
 अणाम ताकेलछनसुनमनलाय वैद्यधन्व



वा०

तरदियो भताय तियात लेत ऊं भाई नडे उखौस  
 जेरै दुध होरत तकोश उहेगी तात नमै होय रे  
 गन धै व्याधा है सोय ताको लेपत बली दिवाय  
 तुरत रोग तन का मिट जाय बली गज को दांत  
 जो दांत में गाव बेलपत्र शिकी चडी ल्याव बक  
 री मुत्र मै लेपी सवाव तावा लकत न देत लगा  
 य सर्प के चुकी धूप दिवाये नीब पत्र ता बिच  
 मिलाये स्नान कराय बालक शुद्ध होय जब ही  
 बली देय तत काल बली दो० नै धै छकी देव  
 ली धूप दीप बली दान मै जा सहित पूजन क  
 रै होत रोग की हान मैत्रः जों नमो के कोली नाम  
 भगवती इदे बली गृह्य गृह्य बालकें मुच मुच

तामः  
७



स्वाहा इ इति तृतीयरात्रिः रेभा उवाच चतुर  
रात्रिजनवत्तगतदैवात्तकहोय उदाश कौतुग  
सत है योगतीरुमसैकरोपरगास अन्वंतरऊ  
वाच रात्रिचतुर्थकहोतजनग्रसतपुतना  
आय लक्षणरोगतिदानसभवरनतहुमन।  
लाय निदान मुखसेबहुतउत्तटीकरैतासोवै  
हो दिनरात खोसीतस्माअधिकः ताहिसमैहोजा  
त ताकोसरदनकीजोयेपेचगग्यतात सर्प  
कंचुगजदंतकीदीजैधणीआत सर्पपहेलीसं  
गलेपिछेकीजैलेप उरुमवारिरमानकरनाकी  
जैबिछेप दिजैवली। जोस्यामको दक्षिणदिश  
लेजाय नैवैधदीपकसहितजतमैदेतवहाय



ਕਾ०  
੮

੨  
ਅਪ



औषध प्रथमस्वरूपोत्तममंगाव गुगलताके  
 विचरलाव पीलिसिरसों का कर भेल घृतमैष  
 वषकावैभेल ताकालेपलगावैवाल सकलः  
 रोगकीहोवैवाल पुनः पंचगव्यस्तानकरावैः  
 रक्तवस्त्रसोंतनपुष्पावै वलीभोगदीजैसुरजा  
 न सकलरोगकीहोवैहान नैवैषकीवलीदि  
 वाय धूपदीपताविचधराय मंत्रपठैताहा  
 कसोबार १०१ वालककोसभरोगतिचार मंत्रः  
 ओं नमो भगवतो हुंकारीताम इदं वलीगृह्य  
 घवातके मंत्रमंत्रस्वाहा ई इति षट्पराजिः रे  
 भाउवाच दो० कहोरात्रिसप्तमीप्रभुप्रसन्नप  
 तताजोग विधिप्रमाणलक्षणकहोहोरपूतना



बा०  
२५

भोग धन्वेतर उवाच लगत दिवस जव सात  
बालगत बालको आन मुक्त केशी जो एतनाः  
प्रसन्न बालको जान चो० बहुतराल जो मुखसैं  
जाय बालक बहुत जंभाई पाय अति साजो  
बचन पिराय ताहि रोग को कहें उपाय औषद  
प्रथम कुंडे की जड ले आव का कडा सिंगी ताही  
मिलाय ताही मै भंग रेका तीर मर्दन की जै सक  
ल शरीर धूप दीप तै बेघ हो पाय ताकी बलीः  
छोतुर तदिवाय दक्षिण दिशा देय तत कालः  
मंत्र पठै ता करीये टाल मंत्रः ओं नमो भगवते  
मुक्त केशी इदं वली गृह्य गृह्य बाल के मुंच मुंच  
स्वाहा ७ इति सप्त रात्रिः रंभा उवाच दो० लक्ष्म

रास  
२५



अष्टमदिनसके कहो विचारविचार रोगसकल  
 वरतनकरो ग्रंथोके अनुसार धन्यतरडवान्नः  
 चो० अष्टमरात्रीवात्तकोआन डंडनामपूतनाया  
 व ग्रस्तवात्तकोहितमैआन तावात्तककासुतो  
 निदान दो० सौंसतआववात्तकोहोररोवैदिनरा  
 त सीसधनैकंपैसकलज्वरकोवेगविघात आष  
 द कुंठकीस्वेतमंगाणकैकुडाजोहिं गुपाय गउम  
 जमैपीसकैवात्तकअंगतपाय पीलिसिरसोरग  
 डकैलेपैवात्तकअंग धूपव्याघ्रनखदीजीये  
 घटजारोगतिसंग धूपदीपनैनेछकीवत्तीदि  
 जेवत्तीदिवाय मंजपटैसंयुक्तकरसभीरोगमि  
 टजाय मंजः जेनमोभगवती डंडनीनामइदं



बा०

१०

बंली गृह्य गृह्य बालकं सुचमं च स्वाहा ६ इत्यहं  
 रंसा उवाच चो० न न दित बालकं होय सु जान ता  
 कोल छन क हो ज या न गृह्य पूतना की स विधिः  
 सोय बाल छन उप जै सु ख होय अन्तर उवा  
 च जव नौ सा दित बाल को लगत आन य हरोगः  
 मरु क दुष होत है य रुता को संयोगः अजामे  
 धी है पूतना यस आन तत कान ता सो सुख पा  
 वैत हि मरु दुषो हो बाल स्वो स मरु उंचा उठै तो  
 इत सकल शरीर बार बार रो वै शिषु नो रुत न व्या  
 पै पीर औषद स र्प य स्नेह मंगा य कै न च दे ता ही  
 मिलाय गउ मृज मै पी स कै धो स्नान कराय मृज  
 मय पात्र जो आन कै ता स ध धूप जो पाय गुड ता

राम  
१०



होमैगरकै तादहिणदिशलेजाय सोखरभौन  
 वलीदीजीयेमंत्रसहितसजाय पूत्पदान्तिका  
 करोसकलरोगसीटजाय मंत्रः ॐ नमो भगव  
 ती अजामेयी इमो वलीगृह्यरनालकै सुचर  
 स्वाहा ८ इति नवरात्रिः रक्षाउवाच दशरात्रीः  
 को आनकै जवहोवै शिशु आन ताकेलछनः  
 सभकहोहमसंगसकलवयान धन्वेतरडवा  
 च दशहीरात्री नालकको अघटहोवै सुनका  
 न महारोगतनहोतहै असतपूतना आन रोद  
 नीनामजोपूतना असतनालको आन ताकीवि  
 धवरननकरुघटतरोगसुरज्ञान रुदनबहुत  
 बालकरै ज्वरकाबाधाहोय दुधबहुतमखसै



बा०  
११

परैदितनिंद्रानिहोय औषद जामतपातमंगा  
ःयकैजीरास्वेतमंगाय कवलबीजसमगेरीये  
छालकुडेकीपाय गडसूत्रमैपीसकैकरलेले  
पसनात नैवेद्यदीपकसहितअनदीजेवली  
दान दक्षिणदिशामैदिजीयेजवहोवैमध्यात  
सकलरोगमितैबालकोमंत्रसहितसुरग्यातः  
मंत्रःॐ नमो भगवतो रोदनी इमां वली गृह्य  
बालकेसुचर स्वाहा १० इति दसरात्रिः अथ द्वा  
दशमासप्रमाण रैमा उवाचः दो० जवबाल  
कएकमासकाहुवासुनोसमदेव कौनएत  
तायसतहेअवताकोकहोभेव अन्तेतउवा  
चचो० वा मासजातबालकजवहोई सकुना

राम  
११



नामशतना सोई असत जाय बालक को चाहो भू  
अप्यास व्यापै ता जवही दो० दिन रात रोव अधि  
क सुत तला लपिसाव ते जो से दीखै नही होरले  
हो जावे ताव वायु ग्रंथ होत नवी छे पीनत दुद  
अचेत बार बार रोव शिशु गल पृतता जात जव  
असलेह पृतता हीर पिपात हि जाय तन हो सर  
हैनहि ताका करो उपाय औषद बीज करे जवा  
आत कै सह देवी रस पाय के लार स संयुक्त करता  
रीप पर गराय बालक घुटी दी जो ये सात बरत  
परवान सर्व रोग तन को मिटे करु धन्वंतर आत  
बली मछी मधुरा आत कै तामै ते दुल पाय पीत  
पुष्प ताहा आत कै तामध आप धराय सात प



बो०

१२

ताकाविचरसातरंगकाजात दक्षिणादिश  
 दोजैबलीजवहोवैसध्यात मंत्रपठैताहावैठ  
 कैवारणकसोसात १०० रोगघटैपीडासिटरह  
 कशोरधुनाप्य मंत्रःॐ नमो भगवतो सकुन्ता  
 नामश्चंदेवली गृह्यरवालकैसुचरखाहा ११  
 इतिप्रथममास रंभाउवाच चो० द्वितीयमा  
 सलहनुकहोदेव तातेकरुतुहारीसेव तुम  
 होदिनबंधुसुखदाता तीनलोकमैहोविष्णु  
 ता धन्यंतराउवाच दो० द्वितीयमासजवहोत  
 जैप्रसन्नपूतनाआय कुमदानामहैपूतनासो  
 बलकरतीआप स्वतगातगातहोजायतीसः  
 हीरपियानहिजाय सकैसकलशरीरतनरो



गकंठकफवाय औषध विसर्पपरेको आत  
 कैसंगमजीठसंगाय भूतसकागागेरकैहोरमो  
 चरसपाय तारीपपसारगरकैकरघुटिततका  
 ल जलदीदिजैवालकोसकलरोगको दान व  
 लीः चावलदुधसंगायकैतामधुकुटधराय  
 तेलतिलाका आतकैचोसुषदीपजलाय नौ  
 नपत्रकीधपटेदहिएदिशलेजाय सप्तरात्र  
 दीजैवलीजवहोवैमध्यान मंत्रपठैपूजाक  
 रैदिजैहिजकोदान मंत्रः जंतमोभगवती  
 वासुदेवीश्रीमुकुंदादेवी इदं वंती गृह्य रत्ना  
 लकंमुचरत्नाहा २ इति द्वितीयमास रंभाउ  
 वाच तृतीयमासलछनकहो औषध अस



लउपाय ममअभीलाया सुनन की दो जै मोहव  
 ताय धन्यंतर उवाच वात कह सुन कान करत  
 तीय मास की आय ममज सोच कर कहत हुस  
 भ व्याधामिट जाय रोदनी नाम जो पतना करत  
 महा सुषसाज महा कष्ट को धाम है सुंदर कहि उ  
 पाय सोरठा अवत मज्ज दित रात महा तन जर  
 वेग को हर दी रोग विधात छोरी वै शुध नार  
 है दो० अनता की औषद कह साज साइफल  
 अडन जवायण पटक डी सजी कर सम तल  
 इन औषद को दी जीये रोग घटे तत काल आ  
 गैता की हवली कह होर दरहाल मन्स य पाज  
 मंगाय कै धजा सात मंग नाय पुष्प लाल कलीये



रसहितरजनीरसंताहापाय घृतमिष्टानमिता  
 यकैवल्योदेतततकाल सर्वरोगतनकोमिष्टम  
 हाज्जवयेष्वात्त दक्षिणादिशवलीदीजीयेहो  
 तस्यामजवजात मेजपठैहोरधूपदेकरैपुष्प  
 सनमान मेजः उँतमोभगवतीरोदनीइमोव  
 ली गृह्यरवात्तकैमुचस्वाहा इति तृतीयः  
 मास रेमाडवाच्यो० चतुरमासलहृतकहोः  
 वालकरोगविचार कौन्तरोगहोवात्तकोकहो  
 रुमसैनीरधार धन्वेतरडवाच्य मासचारवा  
 लकहोयसतपूतनात्राय ताहिनामवरनन  
 करुसुनोरसीकमनलाय भक्षणीनामरुपूत  
 नाप्रसतवात्तअंगअंगः अष्टप्रहरकररोगको



निमिषतच्छाडैसंग दक्षिणह्रायउठैवहुतरो  
 वैदितहोररात सुस्वजायसारासतनहोतजं  
 भाइप्यास औषद सेलघडीकोआनकैतामे  
 कथमिलाय रगडसपारीसंगदेवलीलायवी  
 पाय होरवंशलोचनआनकैवालककोदेप्या  
 य सर्वरोगतनकोसिंदेसुंदरयेहीउपायबली  
 चो० सप्तध्वजापताकात्पाव तंदुलपीतताहा  
 विचधराव होरतामसीरसोंभुरकाव दक्षिण  
 दिशामेवलीदिवाव मंत्रसहितदेवलीदिवा  
 व मंत्रः ॐ नमो भगवतो भद्राणी इमो वलीण  
 ह्यरवालकं मुंचस्वाहा ४ इति चतुर्थसंसि ४  
 रंभाडवाच पेचसमासवरननकरोवालकरो



गविष्याद् सभप्रकारविधविधकहोवेदोकीस  
 रजाद् धन्वंतरउवाच सवैया पांचमासलगैज  
 नसुंदरपूतनाआनयसैतनसारो कुर्कटोनाम  
 जोपूतनाहैयसजातहोवातआनसवारो रोग  
 बधैजोसकेतनमेतहोदेहीकीहोसवियोगवि  
 चारो लछनबोहतमहादुखदायकरोगमहादु  
 खकहवरकारो दो० कोपतददिणहाथतनही  
 रणोवतविशुद्ध बारवारोवशिष्टुबिसरजात  
 सभवुध मुखसकैषांशोअधिकऊंचालेतउ  
 सोम जलवितातृष्णाअधीकयोदुखमहाप्र  
 कास औषदबीजकबलकेआनकैचोखेकी  
 जडपाप अर्द्धसधाडागेरकैपयकेसंगरगराय



बो०  
१५

घुटी दो जै बाल को होत बड़ी पर भात सकल रोग  
तल को मिटे सभ व्याधा मिट जात बली उड दवा  
कुली आन कै लप सीता हा धराय आदर कर सं  
युक्त कर रोटी ता हा धराय अइराज सम दे बली  
दाहिण दिश ले जाय मंजण टे सं युक्त कर दी जै  
बली दिवाय मंजः जैन मो भगवती कु कंटी  
इमां बली गृह्य र बाल के सं च र स्वाहा ५ इति पं  
चमास रं भा उवाच स वैषा षष्ठ्यमास महा अ  
ति सुंदर रोग ग्रसै बाल क ग्रस जावै कौन पूत  
ना आन ग्रसै महारोग को मूल जो आप दिष्टा  
वै महा अति दुखी होत ह बाल क साहब आप  
ही जानव जावै बाल क रोग कहो सभ आज जो

रा०  
१५



जौं तनिधिवालकें सुखपावै धन्वंतरि उवाच  
 छुटे मास सै बालकाल छन महा अपाद सोसा  
 रेजर नन कर औषद रोग निषाद पंच जाना  
 मजो एतना करती इतने रोग बहुत सौ सरो वैः  
 धिक कं छु क फल संयोग औषद बीज संभा  
 ल आन के आसंग दस मंडार मिरच जवायेण  
 आन के पय संग रगड सुधार बालक को दिजे  
 जवो जात रोग तत काल बली तंदुल पास संग  
 य के सुरगा एक मंगाय कुलथी मधुरा संगले  
 मन्मथ पात्र जो पाय दीपक ले तिल तेल काद  
 द्दिगादि शले जाय बली दी जो मध्याह्न को सक  
 ल रोग मिट जाय मंत्रः जौं नमो भगवती पंचजा



बा०  
१६

ताम इमो वल्लो गृह्य गृह्य बाल के से न से नः  
स्वाहा ई इति यय मास रंभा उवाचः दो० मासः  
सात बौद्ध क हो वर नो नि विधि प्रकार रोगः  
घटे आ पूर्व धैः बहु सुय पा वै बाल धन्य ता उ  
वाच मास सात बौद्ध वल्लो गृह्य स एत ना आय  
अव ता का वर न न कर स भ वि ध के दु उ पाय  
सी त ला ना मै ए त ना गृह्य करै ज न आ न महारो  
गत न मै करै अव स भ सु नो न घा न बहुतरु द  
न बाल करै हो र अहार न दि याय तो डै स क ल  
शरीर को से द स हा त न जाय स्वो स को ष ना धा  
अधिक हो र ले नै न मि चाय ता कि अव अ अ द  
कहु जो म ती जा ग उ पाय बौद्ध क वल के आ न



कैकेशरमाहीसिताय लवंगएकताहाडारकैः  
 पयकेसंगराडाय छुटिदीजैवालकोसकलः  
 रोगमिटजाये शुद्धकरोततआपनादीजेवली  
 दिवाये वली उडदभातहोरलोवियावकलीः  
 लेयकराय सागसोयेकाऊटकरोतामधुदेही  
 धराय चंदनगंधमंगायकैदीजैधरपदिवाय  
 तेलतिलोकाआनकैदीपकताहाधराय पात्र  
 मन्सयमधधारदक्षिणादिशलेजाय सप्तरात्र  
 दीजेवलीसौमसमैलेजाय बालककेशोरः  
 सातवरदिजेवलीहुवाय मंत्रपठैसंयुक्तक  
 रद्विन्तमैरोगमिटाय मंत्रःॐ नमो भगवतोसी  
 तलानामइदं वली गृह्य बालकंसुचस्वाहा



भा०  
१७

इति सप्तमास ७ रंभा उवाच दे० अहमासलह  
नकहोसभीरोग बलीदान मंज औषदसभस  
हितप्रघटकरोपरवान धन्यतर उवाच ल  
गत आठवौ मास असत करत है पूतना करम  
नमा विसवास मुसकलतै बालक वचै पुण्य  
करै होरदान कारजाना मै पूतना छोत मै गटस  
ति आन बीस्फोट करै रोग को नाम शीतला जा  
न पाट शीतला के करो धूप दीप सनमान छा  
वापडना देन ही करै बहुत सादान रुदनक  
रै बालक बहुत बहुत आजत नमाय स्वास्व  
रुत कंपत अधिक स्वेत गात हो जाय मुय सुके  
बे शुद्ध रहे ताकि बली दिनाय महा कुछ करो



गयदताको छोडउपाय छावापडेवालकस  
 रेकीजैएकउपाय सवैया मंगवायसातना  
 जकोसोविधसैपीसवाइये सातसातकोय  
 लेचराहेकेसंगवाये रजनीजोतेलडारकेउव  
 टनाबनाइये बालकअंगलेपकेउतारकेहू  
 वाइये दो०जबीउवटनालेपकेपूतलातेहू  
 बनाय नयसकसभपरनकरैदेसिंदूरचडाये  
 लौंगअगाडीराखकेजरदबनौलेपाय सातः  
 वारलेरातनोबालकपरछुवाय उसीबराबर  
 बस्त्रलेकराबिचलेजाय जायकेसभकोगा  
 इदेसभीरोगसिटजाय मंत्र० ओंतमोभगवती  
 कारजा० नामैइदंनली० १८५२ बालकेमुचखा

तब



बा०  
१८

हा ८ इति अशमास रेभा उवाच दो० नवममा  
सलह न कहो सभरुससै परवान उसवालक  
को असत है वास परतना कौन धनंतर उवाच  
नवममास बालक जव होई लह न कह सुनो  
सभ कोई असत परतना तीसको आत रोगः  
कहु करीयो परवान दो० कुंभ करणी जो परत  
ना असत आत अंग अंग महारोग व्यापै अस्थि  
क निमय नछाडै संग बारबार रोवै शिशु ज्व  
र अति महा बलवान पेठ अफारा होत रुका  
सखौ सको धाम औ अद सबैया भील सुहा  
गे की आठरती न कुटा पुन मासा एक ही डार  
मासा ही एक जवाया ले मासा ही दो असल

तस  
१८



तासविचार अडवजवायेणापांचरती फेरनारी  
पयसंगरगडसुधार बालकको जलदी जीयेउ  
श्मकर औषदी सभिरोग निवार दो० इश औष  
दको रगडके की जेपांच मताज रगडदि जीयेवा  
लको हुटत सभी वी आद बली बली दानताको  
कहुले तंदुल वन बाय करै वा कुली लो वियाः  
औ चडी ताहिर लाय मत्स्य पात्र संगाय कैदी  
पक एत सो बाल मंत्र सहित जो देवली रोगघ  
टैतत काल पूर्व दिशले जाइये अड होवै जव  
गत बली दी जीये शुद्ध हो मंत्र पठैति ससाथः  
मंत्रः ओं नमो भगवतो कुंभ करणी इमो बलीः  
गृह्य गृह्य बालके मुंच मुंच स्वाहा ८ इति नव



मा०  
१८५

मास रेभाउवान्न जो० दशवामासलगैसुनखा  
मी तीनलोकके अंतरजामी सभप्रकारसुखयो  
लसुतावो मेरेमनका भरसमटाओ धनैतर  
दशवामासजबहीलगीबालकरोगशरीर  
गस्तपूतनाआतकैमहाकश्यपभीर तामसीना  
मजोपूतनाकरतरोगमहाबालनेजोसेदिषे  
नहिमहाउद्देगवेहाल मातापयपीवेनहिद  
र्योडसभगात अवताकोओषदकहुबली  
मेजएकसाथ आसंगंधजडआतकैजडगं  
गेरापाय अजवायणकोगेरकैमीप्रिखंगर  
गडाय छुटिदीजैबालकोसभीरोगसिटजाय  
बली लालजोतदलकीजीयेमछोमासधरा



य दिवेलेदशचतुर्केउतकोतुरतवलाय कु  
 जीलीजेएकफेर गुडजोदुधलेपाय पूर्वदिश  
 मध्याह्नमेवलीदेततरजाय मंत्रपठेताहावे  
 ठकेसुंदराचिंतलेपाय मंत्रनिष्कैकरदेवलीः  
 बालकरोगनशाय मंत्रःॐ नमो भगवतीताम  
 सीनाम इदं वलीगृह्यगृह्यबालकेसुचमुचस्वा  
 हा १० इति दशमास रंभाउनाच दोहा मासएका  
 दशजवलेगैकौतपूतनाजान कहोरोगक्याक्या  
 करैरुमसेत्रीपरवान धन्वेतरउनाच मासएका  
 दशजवलेगैबालकहोय आनंद नागसैइतन  
 पूतनामिदं नमनकाफेद राक्षसीनामजोपूतना  
 जववलेकरतीआन तुरतबालवेषुद्धहोयेति



बा०  
२०

ज्यैसतमान कहुतविकारआकरकरैहोस्वौ  
सवेहात उडस्वौसतनमेउठैकरतकेवेडेवा  
त नैननयदनाहिन्तहिन्तकरतकविस्वौसतनस  
जाय ताकिओषदकोजीयेरामनाममनला  
य पीपलदाडिआतकेवेडदाडीजोमिलाये  
रगडामिरचसंगदिजीयेमहाकंमेडेजाये न  
लीजोदीजैआतउठमधुरामाससमान तंदुल  
ताकेमध्य धरदोषकतेतअनुमान दक्षिणः  
दिशानलीदिजीयेसातदिनालगजाय कक्षः  
मिटैसभनालकोसुंदरमहाउपाय मंजुःजौन  
मोभगवतीराक्षसी इदंनलीगृह्यगृह्यनालके  
मुंनमुंचस्वाहा ११ इतिएकादशमास रेभाउ०



सवैया द्वादशमासनि चारु कहो सभरोगको  
 नाम कहो ससजाई एतना अंग कहो सभलह  
 एरोगको नाम कहो चितलाई कौन एतना ॥  
 नग्रसै हार कौन बली घोही संज भताई मैतो ॥  
 धीन सभो तुम लाय ससमेरी सभ घोहि मटाई  
 धन्य तखान दो० नाम एतना का सुना प्रघ  
 टे द्वादशमास जो जो लछु नरोग के अन सभक  
 रुप्रकाश सारथि शिशु सो बदिन रोव महाजा  
 सहो बालको उपजत तन मै स्वोस महारोग वा  
 धा अधिक दो० चंचला नाम एतना सभ चंच  
 ल करेय बहुत फलत न मै उठै भाये धन्य त  
 रेव महारोग विध विध कहें फल के डली त्या



य बीजकरंजवा आनमधुविचमिताय र  
गडचटावैवालकोसकलरोगमिष्टजाय न  
लीः सारठा फेरलीजैहरितात पंचगव्यसंयु  
क्तकरफेरकरवावैरतान दीजीयेनलीदान  
होरवस आगहुं दोहा फेरजोसहस्रमेगायकैः  
मोदकसंगमेगाय दाक्षिणादिशमैदेवलीमेज  
संयुक्तकराय मेजः ओं नमो भगवतो जेजले  
श्वरी इदं वली गृह्यस्वात्मके मेजस्वाहा १२  
इति द्वादसासनली औषधचक्रित्यासंरणो अ  
थषोडशवली औषधीमेजचक्रित्यातिरूपते  
रंभाडनाच दो० वर्ष एकजवहीलगैकरतजो  
रतनमाय सोनाकावरतनकरो औषधहोरउ



प्राय धन्वंतर उवाच वर्ष एक जव होल गेय  
सत प्रतना आय नंदनी नामै प्रतना करत रोग  
आ महोय ज्वर बहुत होनै अधिक नेत्र सी चले  
बाल असल होर अति सारका महा जोर बेहाल  
बहुत दाय होत न विषै युजली ताहा समान अ  
तिनिषै जानो सकल महा व्याध की यात औ  
अद माजसा इसो चरस फल धाय के ल्याय र  
तो अफी मसगाय कर सु कि होर गडाय मासेह  
हले राल को होर सभ मासे सात ७ दधि गडकी  
आन कै सभ उस मै दे तरलात आत चटा बवाल  
को अति सार न राय सभ हो ज्वर न का मिटे  
सुंदर ये हि उपाय बली कवल बीज केशर सहि



या०  
२२

तरोटी उड्ड और भात तिलका तेल संगाय कैः  
कर दीपका कसाय हार उपर धर दी जीये न  
ली विचहरनाल सन्सय पात्र संगाय कैः पृष्ठि  
ये मंत्र संभाल दिजे वली पूर्व दिशा ते कन को जे  
ठाल सप्तरात्र लग दी जीये पूर्व दिशा संयोग सभ  
सुख उप जे बाल को ते त पतना भाग मंत्रः ओं न  
मो भगवती नंदती इदं वली गृह्य गृह्य बाल के  
मुंच मुंच खाहा इति प्रथम वषट् वली १ रंभाड  
नाच दोहा बर्य दूसरे विच मै असत योगनी  
आत आवल छन उस के कहो प्रघट रोग निया  
न रंभाते धनंतर उवाच सबैया साल सुता ज  
बहु सरा आवत रोग करै शिषु को सुधना होः



पूतना ग्रास करै जब आन कै बोहत वेणु डूहो  
 बालक जाही शीघ्र उपाय करै नरताही को ऐसे  
 धन्वंतर देत भताइ दारुण कष्ट मरु अति व्याकु  
 ल वर्तनत रोग दिये समझाई रोदनी नास कुमा  
 री पूतना बालक को छिन्त मै गस जावै स्वास क  
 रैत पजार मरु अति आसी उठै छिन देर न लावै  
 लाल शरीर बनै जीस के पुनही मरु अति सार  
 सतावै दहिण हाथ फुरै ॥ हंसता बहु असही  
 रोदनी रोग जतावै जंगल जायेही काम करै हो  
 र आक को पात जो पीला संगाने ल्याय क माघ  
 न घीव जवही उनके उपर ताहा खूब लगाने  
 संचल नरुण मलाय कवाही मः कुलीपा के जो



जा०  
२३

हिमध्वधराय गजपुटश्रौचदिवायउसैवा  
हिछारलेवाल्ककोजाचराय दो० सभश्रौ॥  
सौमिष्टजायतिसजोयोकरैउपाय अतिसार  
काकरुतहुसुतीयोचित्तलगाय असलमंजी  
ठमंगायाकेतासधसीप्रियाय रगडदोजीयेवा  
लअतिसारमिष्टजाय बली सतुबालीजेथील  
कातासैखंडमिलाय कबलविजहोरलोवि  
याकपडाताहाडठाय उत्तरदिशमध्यान्तकोः  
दोजेबलीदिनाय सप्रराजलगदीजीयेवाल  
ककोसुषपाय मंत्रः ॐ नमो भगवती रोदरूप  
णी इदं बली गृह्य गृह्य बालके संन संन साहार  
इति द्वितीयवर्षः रंभाउनाच कवित् लगे आ



नती जा सात की जे सभ हो सभ हो संभाल इश  
मे ना करे टाल मै पुहु सस जाय के कै से बोय  
सत आय मुज को दिजी सु नाय रोग को भताय  
कै हो रवात सभ न नाय के रोगन को क नाम  
पूत ना का क ग्राम होवे अराम संज दी जै भता  
य के रोगन को अने ग संग कै से हो अंग भंगः  
कह दो सभ रंग अंग रूप हु को पाय के धन्यंत  
रउ नाच दो० बरखती सरा जव कहें सुनो जो व्या  
पत रोग जौ न ग्रसत रह पूत ना कह स कल संयो  
ग धन्यनी नाम रह पूत नाय सत बाल को आये  
ता कि बिध बरनन कर छट तरोग शिशु पाये  
रदन करै सो नै बहुत घाटिं तो हा भताय घाटि



बा०

२४

प्रथमसमसाणकोहोवैवाकेसंग ताकोमाडाः  
जोदीजीयेघटजारोगतिशोग संजःमाडने  
काः उँतमोआदेशगुरोको० उँतमोहनुमेंता  
य बलनेताय महाससाणकोयेताय जलका  
मसाणयलकामसाण राहकामसाण बाटका  
मसाण सर्वमसाणभस्मेंतायहुँहुँहुँफटस्वाहा  
अबतुमसुनीयोऔयदिघटतरोगततकाल  
मासादोलेएलवा दोमासेलेराल रतीदोयइ  
लायचीआसगंधदोमास वंशलोचनटंक  
एकरगडैयुबहुलास नाससुंधावैवातकोज  
लमैदेतचराय रोगघटैजबखा तहीदिजेव  
लीदिवाय बलीः पुडेभातचतायकैरोटीखी



लधराय मगवालो कि धूप दे मत्स्य पात्र जो  
 पाय तेल तिलो का आत के दोष क देह जलाय  
 पंचगव्य सेवा त को घोर लात कराय पंचरात्र  
 दीजे वली उत्तर दिश मै जाय मंत्र पठै चित ता  
 य के सुंदर ये हि उपाय मंत्रः ओं नमो भगवतो  
 धन्वतो इदं वंती गृह्य गृह्य वाल के मुंच मुंच  
 खाहा इ इति तृतीया वर्ष रंभा उवाच दोहा  
 वर्ष चतुर्थ के कहो ह म संग सकल उपाय  
 वली मंत्र पूजा सहित स भयो भेद सुनाय ध  
 न्वं तर उवाच वर्ष चतुर्थ के विच मै होत रोग  
 परवान ता को तिष्ठै कर कह स म जो महा सु  
 जान नाम कुमारी पूत नाम हान् च जला जोरः



बो०  
२५

गुल्ल आत करवात को महा काम नहि कहुः  
और ज्वर के नात हो अधिक सुष सुकत हिः  
त्वोस सुक जाय तन सभाविक लमहा व्याधीप  
रगास औषद सह देवी को आत कै का ली मिर  
च संगाय भंगरेर स संग दी जीये स भज्वर छित्त  
मै जाय फल इन्द्रायण के विजले शिव लिंगी  
रस पाय घृत मवात चय इये सुष शो कतः  
मिट जाय बली पुडेल डुलो विद्या मन्त्र यपा  
त्र जो पाय सहत और और सा गले ता के मधध  
राय दीपक वाते चार मूयते लतिलो का पाय  
धूप दीप चंदन धौरे दक्षिण दिशले जाय जल  
मै जाय तराय दे लेत प्रतना भाग बली जो दिजे



सातदिनलेतुरतघटैसभरोग लेजावैसध्यान  
मैवातकशीशहुवाय मंत्रपठैएजाकरैसक  
लरोगसिटजाय मंत्र=ॐ नमो भगवतो चैत्र  
लेइमोवली गृहखरवातकैसुचरस्वारा ५ इति  
चतुर्थवर्ष रंभाउवाच दो० वलीदातओय  
दकहोएजाभेदसमान वर्षपांचवैकेसभी=  
लहुतकहोवषात धनंतरउवाच वर्षपां  
चवांजवलीवातकतनदुखहोय गृहकर  
तहयोगनीजैतकहुसुनसोय नंदनीनामक  
मारोकावसतसकलतनआत वातनमैपीडा  
करैसोकीजैपरवान सवैया एतनाजोरकरैज  
वआतकै रोगवधैकहुहोसतआवै सुकात



भा०  
रह

जायसहाअतिव्याकुलरेचगुदाज्वरभुंसभता  
वै नैनतस्वेतसहाअतिशूलहोरातदिताबुहो  
तिंदनआवे योगदिनोसमहाअतिव्याकुलता  
हीकोपठकरसंजहठवे संजमाडेका ओंनमो  
आदेशगुरुकोः गुरुगंगागुरुबावलागुरुदेवन  
कोदेन जोतुचेलाबरासीयानाकरगुरुकोः  
शेनः ओंकालीसहाकालीइंद्रकीबेटीब्रह्माकी  
शाली तांवेकीकोठडीवज्रकेकीबाडजाहो  
वैठेरुनुसंतवीर मेराहंकाकौतचलैभूतच  
लैअतचलैबावेनवीरचलैचौसटयोगनीच  
लै सातपरिअकाशकीचलै सातपरिपाताल  
कीचलैहुपरिचलैस्यापरिचलै भैरोंससाण



चलैचौसठयोगनीचलै वाँचनवीरचलैमेरेवा  
 लकपररहाकरै नःकरैतोमाताअंजनीकोसे  
 जपगधरैतेरेताइपौचहत्यापडैराउपहत्यावा  
 लहत्या गोहत्यागोजहत्याकुलहत्याब्रह्महत्याः  
 येपौचहत्यातेरेताइपडैशब्दशान्चापिंडकाचा  
 फरोमेंत्राइष्वरसहादेवकाचाचाफरै फरोमेंत्र  
 इष्चरोवाचा इशमेंत्रकोपठकैपहलैसिद्धकरो  
 जपकैरुजारदश १००००० फेरमाडादयसर्वरोग  
 जाय अथौषध दोहा एकसुपारीआनकैगेरु  
 ताहासिलाय गुडजोपुराणामेलकैजटीताहाव  
 नाय आतसुवानेवातकोमायनघृतकेसंगः  
 सकरोगव्याधासिटैहोतरोगसभभंग बलीचो०



भा०  
२७

अंडाएकसुगीकात्यान ताहीसंगमधुराधरवा  
न चरयापिडालेहवताय सातभातकेनस्रध  
राय लौंगइलायचीहोफलेल दीपकनालधरो  
तिलतेल फलपीतहोररक्तमंगाय मधुचानल  
करकैजापाय सहनकराककचीमंगानायः  
सभीवस्तुलेविचधराय लडुरोटिसतुयीरवा  
मैधरैतलाबैठील बालकपरकोलेदिहुवाये  
पूर्वदिशामैजादिजैजाय जलमैसहनकरदेयः  
तिराय योगनीटलैरोगमिटजाय मंत्रःॐ नमो  
भगवती नंदनीनामइदेवतौगृह्यगृह्यबाल  
कंमुचमुचखाहा इतिपंचवर्ष ५ रभाउवाचः  
दो० अष्टवर्षलगबालकोरोगजोहोयशरीरः



वाको तुम चरन न करो कर सन से तत वीर धन  
 तर उजाच य ह वर्य ज व हो लगे होत व्याधि  
 पु देह सुध वु ध भूले वाल स भय ह ले ल द ए ये  
 ह को स दो ना म जो ए त ना ग ल वाल को आतः  
 अब ज्वर को वा धा करे होर अ हार दर साय वा  
 र बार रो वै शि पु नै न न ये ले वाल भोजन क दु  
 भा वे न हिल द ए स हा कु चा ल औ य द चो ० ॐ  
 म ल जा स तो ला ए क ल्या व तो ला ह डै न डी मि ला व  
 मा सा श्री ल स हा गा डाल पा व सर ज ल से गे र उ  
 वाल तो ला ती न स ह त फे र गे र आ ट टं क ज लः  
 र ह ड तार छा ण ज वि वाल क को प्या व उ द्र वि  
 का र स भि मि ट जा व चं द न हो र उ सी र सें गा व ता



बा०  
२८

मधराकइलायचीपाव सीलाजीतमासादेडा  
र रगडवातकोदेतिरधार बली दो० सतुभात  
हारलोवियायिचडोदुग्धमिलाय पुडीयासात  
मंगायकैलोहंडीयामैपाय उपरपुडेपौचधर  
लपसीविधरलेय दीपकचारजोवातकैद  
दिगादिशमैदेय बलीसातदिनदिजीयेजाहा  
होतदरयाव मंत्रपटैसंयुक्तकरवातकरोगत  
साय मंत्र-उंतमोभागवतीकुमारीकोमदिइंद  
बलीगृहगृहवातकैमुंचमुंचखाहा इतिय  
हवर्ष ई रंभाउवाच दो० सप्तमवर्षलगवात  
कोक्याक्याकरतउपाय कौंतपततागृहसहेअ  
वदिजवतलाय धन्यंतरउवाच कुमारीहेजो



गनी करत महाउतपात लछन अवसारे कम  
 हाव्या धादिनरात आसी स्वास होवै अधिक उ  
 लटै दुधा निलान्त अन्त अपै ताउ इमै महारोग  
 को जानत ओयद बीज कबल के आत कै गोर  
 समुंठी पाय सहदेवी रस डार कै तोर गडा कर  
 वाय आत जोदि जैनाल को सकल रोग मिट जा  
 य बली चो० तेंदुल पीले आप करान तासुगी  
 का अंडा धराव कतिये रफल संगे गावै सात दी  
 जै बली बडी परभात शुद्ध होय स्नान करानः  
 पंचगव्य सेनाल लुवान दक्ष दिशा देय ततका ए  
 ल सकल रोग की हो जायात मंत्रः ओं नमो भग  
 वती नाना चने दा कुमारी इदं वली गृह्य गृह्य वात



बा०  
२६

केसेचसेचस्वाहा इतिसप्तवर्षे ७ रंभाउवाच  
वर्षेआठवेंकेकहोसभीरोगसमजाय सभसे  
शामिदजामेरावालकहोतउपाय धन्वेतरउ  
वाच वर्षेआठवांजबलगैमहावालकोषेद  
अचताकामकसदकहुरोगउपावतभेद नै  
दनीनामकुमारीकाअस्तवालजबजाय महा  
रोगवाधाकरैताकोकहंउपाय सीतलदेहस  
भहोतहेमहाकष्टकोधाम पेदउफाराहोअधि  
कमहाअस्तअभिरामः औषदचो० सुंउसहा  
गाहीगजोल्याव ताकेसेचलविचरलाव अ  
ईकरससोगोलिकरडार चणकप्रमाणजोक  
रोविचार गुलाकेदतोलाभरल्याव सासेचार



सनायजोपाय उत्तकाडायुष्यकाय उपरपौ  
चमत्तकापाय आदसेरजलदेयजोपाय उस  
जलको तुम घोही पिलाय दस्तलगे जल फूल  
तसाय उपरते वटी लेयाय सभी रोग तनको  
मिट जाय बली श्री चंडी साग तुरत करवान  
ताही बिच जो लो विया पावन मछी श्री लताम  
ध्य धरावन तामै दीपक चार जलावन होडी मै ध  
र कै ले जाय दक्षिण दिश जो बली दिवाय तीन  
रात्री दी जे बली दान रोग तन सै यह निश्चै जान  
मंत्रः ॐ नमो भगवती नंदनी इंदुवती गच्छा  
ह्यनाल के मुंच मुंच खाहा इति ग्रह वर्य ८ रे भा  
उवाच दो० नवममास जव ही लगे वाल कव्या



बा०  
३०

आहोय कहोरोगकैसेकटैहमसैसुनिजसोयः  
धन्वेतरडवाच नवसेसालकेविचमेकरतए  
तताघात अवलदाणाताकेकहुंसुअसमाज्यसु  
असाय होसनीतामजोपूतनाअसतजविसुत  
आय येतदाणहोजातहैकहुंसभीसमजायः  
ततमैपीडाज्वरअधिकसकसभिततजायः  
आंसीतिंशानहुतसीएतेरोगउपजाय अतिसा  
ररुसाअधिकउपतरोगनिदान ताकिअव  
औयदकहुहोरोगकिहान औयदकोभर  
डैबडोतिंबौलीबीज मोयेसमकरल्यावैरों  
कवलबीजतामध्यमिलाय सभतेआधागेरु  
पाय काडाकरैपिलावैआत तुरतदुःखकीहो



जाहान गिलोयपत्रीसजो धनीयालेय ताहिस  
 मजोसुंठधरेय बेलगीरीसोयेतेत्रवालाभेका  
 चरायताकुडेकीछाता चंदनबहिजडपद्मा  
 य येसभसमसात्रालेराय दरडाकरकाडाक  
 रवान देवालककोतुरतपिलाव रोगघटेसुः  
 खहोयशरीर महाव्याधरुटजागंभीर बलीः  
 तंदुलतालकरायकैपुष्पपीतलेआय मुगी  
 काअंडाधरैतडुपौचधराय लौंगइलायची  
 दोपलेधूपकरैसतलाय पुडेपौचबनायकै  
 उपरदुग्धजोपाय मंत्रपटैदशवारहोपूर्वदि  
 शलेजाय बलीदिजीयेस्यासकोसकलरोगः  
 मिटजाय मंत्रःॐ नमो भगवती ह्रीं सती नाम



भा०

३१

इदं वलौगुखगुखवातके संजुं संजुं जखाहा इति  
नं वनवर्ष २५ रंभा उवाच दो० लगत नवर्ष दशवा  
जविनालक होत अचेत कौनगुस है पूतनास  
भिवता ओ भेद धत्वंतर उवाच नवर्ष लग दश  
वाज विषे होता नन रोग नाम रोदनी पूतना क  
रत महा विषेण नील वरन होये हुका हुच की  
रोग विचार गात सक पिंजर वनै ये निश्चै मन  
धार ओषध चो० जाय फल लौंग इलाय चोत्पा  
व नय पत्र जत कुया ता पाव केशर नाग पिप  
ता मूल तज चीता सीप्रिसमतूल कथत मा  
त उटंगण जान सुरा शाती कुले जण आनः  
अज वायण जड होर पतीस कर्करा होर जो वहु



फलीस मोये निडंगी जो चंदतखेत ससुद्रसो  
 यशोघाडेलेत दोदोमासेसभलेआय अफो  
 मजोमासाएकमित्ताय करगोलीअडकरस  
 पाय गोतिबोधचरणप्रवान पौतसंगजोदो  
 जेयात रुचकीरोगसभिमिटजाय पुष्टकरैः  
 द्रव्यदूरतसाय बली चावलहोरलोवियाः  
 त्याव घीचडोहोरयिल्लासंगवाव दक्षिणः  
 दिशावलीदेजाय दीपकतामैधरवलवाय  
 मंत्रः ओं तसो भगवतीरोदनी इयं वली गह्वर  
 हवातकं मुंचमुंचस्वाहा इति दशावर्षः १० रं  
 भाउवाच दो० वर्षाकादशजवतगैउसवा  
 लकोआय कौनरोगइशतननिषेदेतहव्या



धलगाय धन्वेतरडवान्न सवैया नदितासु  
नवातविचारकहुसभरोगकहुनिश्वैसन  
लाई अंगको भेदविचारकहुसभरोगकोता  
मकहुसमजाई पूतनागदस्तकरैजवआनकै  
जोमसबुद्धिहोयैसउपाई भेदसकलसभवा  
लकको सुतियोचितलगायकवातजताई  
बालनीनामहपूतनाकासभवातकहुऔर  
रोगजनाउँ यहिलिकारमहातनअर तो  
कोसमंतरदूजासनाउँ औषदभेदकहुंति  
सकोगुरुआपनेकीमैजलहारीमजाउँ दोहा  
पातसंभाल्आनकैकस्तारनूणमित्ताय रस  
कंवारकाडारकैताकोलेततपाय उस्मउस्म



कोवां धिये कां रूपी डसि टजाय ताको मंत्रः  
 सैकी लीये तनवां धातर हाय आलु बयाराः  
 आन कै जीरा खेत असेत सुख मै दी जै बाल के  
 तस्मारोग कहेत तस्मारोग इशतै मिटै समज  
 नारसत भाय आगे होर डपाय के लक्षण कहं  
 सुनाय मंत्र कछरा लोकाः डोंत मो आदेशण  
 रौको कारु देश कम च्छा देवी जाहा वसै अ  
 समाय त योगी बध कछरा लो ब्रह्म लाती नो  
 एक ही संग हनुमान फिटकार ते मार करै भ  
 संत शब्द शाचा पिंड काचा फरो हो मंत्र इ  
 श्वरो वाचा महा देव का शब्द शाचा मंत्र सिद्ध  
 कर लेय जप हजार २० फेर जा डो देय सिद्धया



य अप्यवली कोरापात्रमंगायकै दीपकता  
 हाधराय पीलेतंदुलकी जीये होर जो लपसी  
 पाय पीपलपते लायकै कोसी ताहा धरायः  
 दक्षिणादिशवली दिजीये सभ संसै मिट जा  
 य मंत्रः-ॐ नमो भगवती कुमारी बालनी इदं  
 बली गृह्य गृह्य बालकं मुंच मुंच स्वाहा इति  
 एकादश वर्षः रंभा उवाच सब इया द्वादश  
 वर्ष लगे जब आत कै रोग महा दुख होत अती  
 ती व्यापत रोग महा अति व्याकुल रोग कहो क  
 र कै मन प्रीति पूतना भेद कहो रुस सै सभ मंत्र  
 बली दिश बाल परोति पूव कहो मन लायकः  
 बाल स जैसे हो ग्रंथ नमै हरीति धनंतर उवाच



दोहा आसणी नाम कुमारी का सोइ पूतना जा  
 न गृह आत करै बाल को होत रोग को घान चो  
 बहुत जे भाइ बाल को आन बहुत हसे अका  
 शदि घान नैन न सैता दिखै कोय महा कष्ट  
 का बाधा होय अनता को स कहें उपाय कर  
 निष्प्रेम न इश मेलाय ओयद तब कुरात फला  
 तुरत मंगान तामे छोड़ि हरि पान जाने जी हो  
 र लौंग मंगाय होर जाय फल गेरो ल्याय कूट  
 रगड कर सभ छुणवाय बिचहिंग आदर  
 सपाय बहिर तो दोय प्रमाण पौन संग जोदि  
 जै घान घात रोग सभहि मिट जाय इश तेउ  
 परनाहि उपाय बली नास मती का भात वना



व द्युतनूरातेसायधराय रोटिलोवियाध  
 रैडवात तिलहीतेलसंगदीपकवात फल  
 नंवेतीदेधरवाय उपरलौंगइलायचीपा  
 य नैजतदिशावतीदेजाय साफसमैदुःख  
 दूरतसाय मंत्रःॐ तसो भगवती ब्राह्मणी इ  
 दं वंती गृह्य गृह्यवात कं मुं न मुं न स्वाहा इ  
 ति द्वादशवर्षः १२ रं भाउवाच दो० वर्ष तेरवें  
 विचमे कपाकपा होत उमंग सभरहाक हो वा  
 लकी मिटत सकल मत्त भंग धनंतर उवाच  
 सबैया वारैसा लकहे संपूरन तेर नौ साल क  
 हुसुनवाला जो मना विच विचार करै कहु  
 रोग कहु सभही दरहाला औषद रोग उपाव



हो

कहुं सभ संसत को मत धोत कताला वारें वार क  
हुसम जाय क वाल व नैरि दु पाल गोपाला दो०  
धन दाता स कुसारी का अ सत वाल को आय हा  
अपों व क ये स कल अति सार हो जाय और्ये०  
बेल गिरी को आत के गुठली और नमिलाय मा  
जुमाइ सो चर सरती की समलाय धाय फलर स  
पोस सौ की जे गालि आत ताजे जल संग दी जीये  
जव वाल को को आत अति सार सिट जाय सभ हा  
पैर ये भजाय कहुत धन वंतर सत्य है सुंदर महा उ  
पाय बली रोटि पिचडी भात ले फल फलै ल ध  
राय धरणी दे हरिताल की मृत्तम य पात्र जो पायः  
पूर्व दिशा दिजे बली संध्या समै जो जाय मंत्र पठै

६२



बा०

३५

चितलायकैसुंदरयेहिउपाय मंत्रः डौनसोभ  
गजतीकुसारीकाधनदानामितोइयेलीगृह  
गृहवालकैसुंनसुंनसाहा १३ इतित्रयोदशः  
नयः रेभाउवाच दे० पूतनामकहोसभिरोग  
गृहकहोहाल बालककिरदाकरैअबकहो  
बचतारिसाल धनंतरउवाच सभिरोगनरत  
नकरुयथाशक्तिसमबुध सभम्बाकुलतारो  
गकीबालकहोतविशुद्ध कुंकुमीनामकुमारि  
कावसतबालकेअंग आतनकोव्याकलकरै  
होरोगसहाअतिभंग चारदिशाबालकसकल  
देखैचीतलगाय वेगः जोरहोपवनको वाइअ  
बलहोजाय सुनपातबालनहिहोःअसाध्यः



अहिवाल नाउपावउसकाकहुवलीसंजक  
 हुनाय नाकोएजाकिजीयेहोरदनावैदानः  
 मत्तुजयकेजपकरोजबहोवैकल्याण गंगाः  
 जलहैऔअदिमंजरासकोनाम कयाकरैआयु  
 नधैशिरपैऔरघुनाय हरिनामशिमराणकरो  
 आठपरदिनरा५३ नहिमंजनादिऔअदिनहि  
 वलिणकदान उसकीरदाकरनकोआनैगेभ  
 गवान मंजः ओंनमोभगवतीकुमारिकुंकुमी  
 नौइदंवल्लोगृह्यगृह्यनालकंसुंजमुंजस्वारा  
 इतिचतुर्थदशवर्ष १४ रेभाउनाच चौ०पंचद  
 शवर्षलगेजबजान कहोसमिइशकापरवा  
 न कयाकयाहोतरोगतनमाय हमसेतिसभक



बा०  
३६

होसुनाय अन्तर्द्वारा सुनोप्रियासुतशाची  
वाती कहंसुनोयेवातकहानी कहसुतनाजो  
तमीआन वातककोद्विदमग्रस।आन हंसः  
नीनामकुमारिजात असतजनिवालककोआत  
येतछतकरदेद्विदनिच महारोगव्यापेअतिति  
च बहसनायगोलेकाजोर तपदारुणरहमहा  
कठोर तिसकाजोरअफाराहोय आगेनाकछु  
रहालकोय औयद अफलातुकुटाचीतात्या  
न मोरशिआहलदिरसपाय लौंगइलायचीरु  
जायफलडार नामैबीजभांगतिरधार येओ  
अदकुटकेछाण अदकरसकरनटीआण वा  
लककोदेचणकप्रमाण आदेकेसेगदिजीये



घाण पहलदिजीयेदस्तदिवाय सर्वरोगव्याधा  
 मिटजाय जुलाव दाखमनकाहोरकुलकंदहोर  
 नखोतसनीयसुचंद असलतासलेतुरतमंगाय  
 बडोहरडकीनकलिपाय अंबलीलेकरजलभी  
 जवाय सभअमदकाकाठाननाय तोलातोला  
 भरसभलेय काठाकरदिजेछावाय उपरतैः  
 असलतासजोपाय असलतासपहलैभीगवा  
 य उपरअंबलीकारसडार पहलकरमुंजसको  
 त्पार जबदिजेकाठाकरप्याय दस्तलगेचोताः  
 मिटजाय दो० मछीमासमंगायकैलेसिंदूरल  
 गाय पुडेपौचबतायकैसदतकमैधरवाय  
 जिसमैदोपकवातकैदक्षिणादिशलेजाय दो



बा०  
३७

जैनलोमध्यानमैवालगस्तमिटजाय मंत्रःॐ  
नमोभगवतोकुमारोदंसतीइदंनलोगृष्टगृष्ट  
बालकंमुंचमुंचस्वाहा इतिपंचदशनम्य रेभाउ  
नाच दो० नम्यजनीयोडशलगैकौतरोगकोवे  
ग करानिष्प्रेमनमैकहोवालकहोउड्डेग धन्वंत  
रउवाच सुनोचकिन्साबालकीजोजोरोगशरीर  
अवताकेवरतनसुनोहोरधरोमतधीर नीलनी  
नामजोपूतनाकरतबालकोषेद विनाग्रंथजा  
नेविनानापावैकहुभेद तापःदाहृतनविचहो  
सभकंपतफलगात जगतअहारशरीरसमसह  
रोगउत्पात औषद धानियातिलोकरसहितसौं  
फजोजीरापाय पौचवीगेरगितोपसुनकाछः

राम  
३७



करके प्याय पुनः बोसा छारमंगाय के होर के य  
 ली छाल निंब छाल के आन के अंबली छाल वि  
 शाल होर गिलोय को डार के काठा करके प्याय दा  
 ह मिटे ज्वर जात है सुंदर महा उपाय इशविधका  
 ठा कि जीये उपर सरुत जुपाय पोपल एक बुरका  
 य के देर नलाने वीर सकल रोग मिटना लकोशी  
 तल होय शरीर बली दुध भात पिचडी सहित  
 मधुरा मास धराय दिजे बली जो आत उठ घृत  
 दीपक बलाय दक्षिण दिश बली दिजीये ती  
 नादिना परवान मंत्र पठे ता कि सहित होत रो  
 ग कि हात मंत्रः ओं नमो भगवती सीतलानी ल  
 तीताम इदं बली गृह्य बाल के मुंज मुंज खाहा



भा०  
३८

इतिषोडशवर्षवलीसंशर्णो १६ अथसर्वसंसा  
णकथनं घाटिकेवेदेयंमंत्रः प्रथमसाण  
मंत्रः ओंनमोआदेशगुरुको हरियापरवतव  
सैहनुमंत आयाहस्तगदागो जतआया उत्तर  
पुलटताआया परवतयानडयाडताआया लो  
हेकाकोटवज्जकेकीबाड चारोंयूटजोबंधुः  
जाय तिससैवैठेहनुमंतवीर पूर्वकादेशबंधु  
पडिसकादेशबंधु उत्तरकादेशबंधु दक्षिण  
कादेशबंधु चारोंदिशाकामसाणबंधु अजा  
सुरबंधु भैशासुरबंधु जलकामसाणबंधु अ  
लकामसाणबंधु रुखवृक्षकामसाणबंधु  
षेतकल्हाणकामसाणबंधु चूल्हेदेहलीका



मसाणबेधुँ अचलीयामसाणबेधुँ चलीयाः  
मसाणबेधुँ हडफरीयामसाणबेधुँ मगीया  
मसाणबेधुँ चिगागीयामसाणबेधुँ अपरी  
यामसाणबेधुँ कौडियामसाणबेधुँ गुडली  
यामसाणबेधुँ टिकिरीयामसाणबेधुँ माव  
सचौदशकामसाणबेधुँ होलिदिवातिकाः  
मसाणबेधुँ गर्भभंदीयामसाणबेधुँ जल  
कीजोगतीबेधुँ अलकीयोगतीबेधुँ पाता  
लकानागबेधुँ अबीसबेधुँ परीबेधुँ चडे  
लबेधुँ आनणबेधुँ जाणबेधुँ हाडहाड  
बेधुँ रामरामबेधुँ बालबालबेधुँ इप्पर  
महादेवकीदुहाई शब्दशाचापिंडकाचाफ



भा०  
३८

रोहो संत्र इश्वर महादेव का वाचा जायुं रैः पहलै  
संत्र जप लेय रुजार २० फेर जाडा देय १ इती  
सप्रकार ससाण जाय इइ इति ससाण संत्र = १  
अथ चारो दिशा देव तगै होति सका छलाण स  
दोहा अति हंसै रोवै अधिक कवि मछो होय  
कदि उटै तन पुल बह गस्त न तु दिश होय १  
उषाव मत्पु जय के जप करो होर करो कहु दा  
न जाडा दिजा संत्र सौ होत रोग कि हान अजा  
सुरगस्त छलाण अति सोवरो वन हि कवि क  
विले तउ सौ स रक्त जात गुदा सेव ह्यो ना जीव  
न को आस उषाव सात वाज का पूत ना तुरत  
को जीये आत रोटि को जै उड द की ता उथलैः



ना जान बारि सातहु नायक पूर्व में ज जो जाप  
रोग छटै स भवा ल को तुरत मिटइ त न ताप र  
भैंसा सुरगुल छलन भैंसे को समत न वनै =  
होत महा तन दाह होत या ज नहु त न नि अये  
अति रोग विधाद उपाय लेर सात चंद त सहो  
त वंश ही लोचन पाय गाडा दीजे मे ज सो फिरः  
देत रगड कै पाय अथ जल म साण लक्षण ३  
नौहत त या जल की लगे होत टी छणी बालः  
स्वेत वरण हो देह का बाल सूरै बिन कान उपा  
यः सह देवी रस आन कै अई मिर न ले पायः  
तुरत पिलाल बाल को सकल रोग मिट जायः  
अथ रुख वृक्ष म साण लक्षण आठ परतय



बा०

३४०

तनविषैकविउत्तरचडजाय अतिसारहोत  
 नविषैकीजेतुरतउपाय औबपडैअतिसा  
 रहोकदिलालखेतहोजाय दर्देउठैअतिपेट  
 मैकरऔषधमिटजाय औषध कुशमधाय  
 माजसहितहोरमोचरसपाय माइइइजवः  
 आतकै खूबतरैरगडाय बेलगीरिसमगेरकै  
 समपोसतडोडिपाय कूटछाणचूरणकरोता  
 जेलजलसोआय रोगमितैजबबालकोतीत  
 टंकपरवान हसातदिलालगदिजीयेहोतरो  
 गकीहान अथयेतमसाणगल्ललक्षण भू  
 यनहोवैबालकोअन्ननहिमनभाय हरिव  
 लदेयेबहुतगुनिजनदियोभनाय उपावः

रामः  
 ४०



फूँक सपारी सी पको होर कौडि की छार बालक  
 जाय चटा यदे सभ व्याधा सिट जाय अथ लु  
 लहे देह ली काम साणा गलतल० स्याम नरन सः  
 कै घना परत ददौरे गात थुरेंड बहुत मोटा गि  
 रै करत बाल को घात उपावः मंत्र पठै पूजा  
 क होर दिवा वैदान मन्त्रु जय के जप करै ज  
 ब हो वै कल्याण अथ चली या ससाणा ग०।  
 मा सों जो सू की रहे गुदा गडा हो जाय अवण  
 जो को मल जाणी ये ता ससाणा तुम जो य उपाव  
 वैसी मटि आत के वथु बाबी जमिलायः प्रा  
 ण गुड जो मेल के ताल वे उपर लाय पात आत  
 कै आक के मथ के चापडः घीव रस उत काही



बा०  
४१

काठकैतताकरकैपीन चौ० पातोकासिलपा  
लीलेय बालककोसभसंधसलेय नयबीसों  
कोजोतुमलाओ रंजकनेकीनाशदिवाओ  
मंदओखशिरसहितहीएको करुधन्वंतर  
रोगनसैगो अथमसाणधूलियाआकाशयोग  
नीउत्पत्तिप्रकारलक्षण चौ० योगनीजतकर  
तीजलआइ ओचलपीबतहकहुताही ए  
कसहितेलगबलहोई उपावकीजैहैसभको  
ई दो० तीनससाणजोहोरहोइशयोगनीबल  
साहपितीयाहोरहडफरियासृगीयादियाभ  
ताय ताकेअबलक्षणकहुंतीनोएकसुभान  
सृगीयासैउत्पन्नहकअमशाणसुतान ल

रामः  
४१



द्वाण = कौनवरसहोरकलसलीसीतलहायः  
 होरपौव नालककोयहरोगहोताससाणपर  
 भाव मृगीयातलदन हायपौवफटतरहैकौ  
 नसरदहोजाय आखसिचनोलेतहिमृगीया  
 दियोभताय कच्चाससाणतलदण उइवियैअ  
 गिनवहुतहायपैरहोस्याम परतददौरेदेहमे  
 कच्चाजानोताम उपावचो० दिजेनासमोये  
 कोल्याय ततापाणीकहुमिलाय ततापाणी  
 जनायणदेही ताकि कहिनाससुतयेहि दो०  
 आधिसिरचरलायकैनाशनालकोदेय नि  
 ताजाणलेणीतहिजोजाणैसोइलेय उस्सः  
 बारिसंगदिजोयेसकलरोगसिदजाय पुनः



नो०  
४२

कंपैशिरहोरपौननेत्रहोस्वेतही अकाशप  
रिग्रसजाययेजाणोभेतही तिसकाकरोऊ  
पानतुरतसंकटकरै करोनिधिसेयुक्तरोग  
सारघटै पुनउपान सवासेरोगेहुतुमलेहीः  
तामधवीडापौतधरेही सातपतासेतामध  
रो अकाशपरिकाभयमतकरो होडिविच  
धरोघरसाह सातभौतकीयोगतीजाय ए  
कसरावोकोरिलेय दहिभाततामध्यधरे  
य बालहुवायमडेरेराघो सातपलीतेदि  
नमैभाघो कोरेदिवेहीसौवालो कडवाते  
लदिवेसैडालो जासेरोगफिरआवताहीः  
लीयकरयंजगलेसैवांधो रोगघटैतिश्रेः

रामः  
४२



ये भाषो अथ चिरागी या मसाण ८ तल दण म  
 अथ जो ज्वर की अभा होई पिछु जीव ब्रासा हो  
 ई ग्रीवा फे त मुख आवे छाग ता को ह चिरागी  
 या कि लाग नेत्र फेर राये जो पसार भणै धन्वत  
 र रोग अपार उपाय = मी सलाए क तुरत संग वा  
 न ओरिगत जल से ये जलियाव लिख करये त्र  
 गले मेराय जाय रोग धन्वतर भाय चार हाक  
 पडा संग नाय ताके चारों रंग कराय नीला पीला  
 स्याम सपेद सात पुडी कारायो भेद सात ही सि  
 रसों सात ही दाय नील मणी क चतार हो रलाय  
 सारि नस्त सम ऊठाय गमत को रो उत्तर दिश  
 जाय कदली फल के निच ठहरै दोय सपारी



भा०  
४३

लोगदशधरै महरि कुंकुम चुरी देही जायस  
हि देखै लछ नयेही दो० जो बालक जागै तहिः  
जागतही विललाय औ चतकोपी नैतहि ताः  
काः करो उपाय करत धन्यंतराग्रस्त है योगनी  
चक्रफिराय उपाव जो० कुंकुम महरि होर अ  
अंजीर वणवाः चर्या लावो चोर जल के तिक  
टलेय करधरो नव बालक की रक्षा करो अः  
अपरिमसाण गस्त छलने दो० हाथ पोंज की ता  
डीया सभ ठी ली छुट जाय। और वाको फेरै बहु  
न ताहि ग्रस्त वतलाय उपाव जो० सात ताज  
वैसी कि माटी तिसको पिसो उलटी चाको ति  
सका पून ता तुम कर लेओ तेज माहि दो मोति दे

तामः  
४३



ओ कचाकरनासातहोछेक लौंगचारहोती  
 नहीमेअ कपडाचारगजचारोरंग नामधरा  
 कनालीयेरसंग सातकुवेकापाणिआणे सात  
 रुखकीपातिजाणे नदिक्तारैलेकरधरोपुत  
 लेउपरतिलककरो तापूतलेपरकीलकराओ  
 मेजसहितसेअसतहुयवो इशीरोगकायेहिउ  
 पाय कदधन्वेतारोगतसाय अथमत्पुकेको  
 डियाससाणलक्षन दो० तीरीयाहोतअधानसे  
 मत्पुष्टपडजाय बालकछायाजाणियेपीक  
 पडेत्तनासाय फलसीफोडागभैमैमहाअग्नि  
 होजोर जन्मतहीहुलजायतननहिरोगेहु क  
 ओर लक्षनमत्त्वनत्सागुडलीयातामसाण



बा०  
४४

काहाल हाथ पौनसूकर है मुख जे चल अहा  
र तीही बाल क छाया लगी हारन कहु बीकार  
ज्वर साहि सुकतर है ताको दृष्टी मसाण हाथ पै  
र गोडैय कै ताको गुड लीया जाण चो० दोनो सं  
य नैन जव लेहि चुप कर रहै न दुधी पीने हीयो  
गती चक्र लगी जव जान सकल रोग का कहु  
बयान तुरत बाल का करो उपाय ताको बाल  
जीवा वराम ताम क चाम साणा ह जोर कर उपा  
य सम जो कहु और उपाय चार हाथ क पडातु  
मलेही ताको चारो रंग करेही सातही पुडी दास  
सीरसाही तामै सिर सो गेरो राई सात थोडकीः  
शीरणी लेय सात जाय फल तीत लौंग धरायः

रामः  
४४



सातनाजकाएतलाकरले सारिजस्तबिधिसै  
 धरले मेजपटेजोडुनावनाल तुरतमसाणाजा  
 यततकाल भोगेधन्वंतररोगनसाय प्यारिनाक  
 दुहोरउपाय अथउतमठिकिरोयाअतिस्थम  
 साणाकयनीये गर्भभदोयामसाणकुसमसाण  
 लक्षण चो० जीवालातफराणीदेही ताकोवा  
 लकतुरतमरेय उड्खौसहोरतजैअहार जाणो  
 अंदरोगतिरधार पुनअरिहासछंद परैददौंगा रे  
 तकुसुसमजाही लालसंगरेअंगयेहिपरभाजही  
 अतिसारततथायस्वेतबिष्टाइवै ताकोजाणस  
 साणधन्वंतरयुकहै उपावचो० पढलेजरतउत  
 केकरै तापाछेदोषडियाभरै भरदोषडावातक



बा०  
४५

परदेही उत्तप्रीत इशविध करेई नीन अतीत  
जमान-चार चौसठ योगनी मंगलवार बहिगर्भ  
ही की रक्षा करै सभ बोस साण सै बालक टरै कु  
सम साण पोषल की सेवा पाथि बसा हा देव की  
शेवा इशविध बाल कर दा होई जीवै बालम  
रै ताहि कोई लिरव करये जले गले बंधाव काम  
छोड दित प्रतिबुधान अथ कुसम साण गुडती  
ये का तागाः ओं नमो आदेश गुरु को गभयं भै गुरु  
नाथयं भाई ताकिरी दा बा वती करै गौरों का  
तागा कचा सूरत डोरा करै सहा देव जमन धरत मा  
ता काल दुपिता का बिंद लोहे का डंक एण बज्र का  
बाण इशविध गर्भ की रक्षा करै हनुमान मेरी

रामः  
४४



भाक्तिसेरेगुरुकोशक्तिः पुरोसेचइप्परसहादे  
 लकावाचापुरै वाचाकैकुंभीपाकनरनमाप  
 ठै शब्दशाचा पिंडकाचा पुरोसेचइप्पररोवाचा  
 तागालेयकैसेचपठकैएकगौठदेय याविध  
 सातगौठादेयकैएपदेयकैगलसैबोधैः सर्व  
 रोगजाय सेचपहलाजपकरसिद्धकरैरुजार २०  
 अथयपरीयाससाणकोपससाणलक्षण दो०  
 कोपआतजीसपरकरैअसतबालकोआतः  
 जीभबाहरमुखसेरहैअतीसारबहुजात औ  
 अद हलदिपर्बतआतकैमोयेताहीमिलायः  
 अडबजवायणसेचलतुणसहितगुडजोपुरा  
 णपाय। बटिजाडिवेरसमदितइकीसतगया



आ०  
४६

मेजजपोआगैकरुसुंदरचितलाय अणमंजः  
जंतमोहनुमंताय बलनेताय वज्रतोडतायः  
परवजपायातडयाडताय हैसाततेरेशिरपर हनु  
भरेजात काहंतगाईएतीवार कारीविहोः  
लातपडाण लातवयाराजीसचठआईसीत  
तामसाणी डसकियामसाणी धरदयामसाणी  
धुमियामसाणी कलेजपेटमसाणी सोईयामसा  
णी सुकियामसाणी कोटियामसाणी सोईयाम  
साणी सोईसोईअनसोई सप्पोहिसोई हनुमंत  
नंधकरल्यान भरीआवरीती जायइशपिण्डकी  
हनुमानरिछापायकरल्यावैमसाण दुखनेडै  
नाआवै मेरीभक्तिःशुक्रकीशक्तिःपुरोमंजोई

रामः  
४६



प्रथमोवाचा महादेवकावाचा फरै हनुमानवज  
 रंगजतीकावाचा फरैः इति संज्ञः पहलई संज्ञः  
 सिद्ध करलेय जपै हजार २० फेर माडा देय सर्व

रोगमसाणी नस्यति  
 अथ होलि दिवाली  
 कामसाणा गुल लक्ष्मी  
 एं दोहा जन्म न हो  
 सक तरहे पिछु सक  
 तन जाय विसहरीज  
 जाणीये गुदा जोरतः  
 नहाय चारो लक्ष्मी देय  
 कै जी हा खेत जो होय

ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं  
 ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं  
 ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं  
 ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं

ओं ह्रीं	ओर	क्षी
ओं	रुद्र	रक्षा
क्षी	क्षी	म
म	मन्त्र	ह्रीं ह्रीं

न



निसही चोपट जाणीयो कह धन्वेतर सोय औ  
 मय चो० सांदि चालल मरुदि सेन घात कालः  
 मल पाणी नपीन सीपी दोवा लक को देय रोग  
 जाय इशनेय कह सोय मयणी घीन अतुण  
 माय जे बालक बहु ता सुष पाय अण ज्वर उ  
 पाव अजवायण अजै पाल संगे औ ले दो तो  
 को तुरत पिता औ रती एक जव देवै थाण तुर  
 त होय ताहा ज्वरै हाण उस्म वारि जो दिजै आ  
 प तुरत सिटै बालक को ताप दो० अजै पाल  
 दो टंक लेगे रु दो टंक जाण चार टंक लिजै कडु  
 कूट ही कपडा छाण रस क बार के बिज मै बही  
 चण क प्रमाण सीतल जल सो दी जीये हो नम



हा ज्वर होन इति चौबीस अकार ससाण लक्षण  
 उपाव ज्वर संध भेद संपूर्ण अथ के वेडा उपाव  
 चो० बालक जी से के वेडे आन ताहि को एक ये  
 जवन नाव अथ सविच धुँगा की के ले जावे का य  
 रुता हा बालक प्राणाव चावे लहेगा पाडका  
 रुतत काल येह ली पाडका ठिये बाल येही ये  
 अपहले करवान बालक तुरत के वेडा जान  
 होरये अ एक कहुं अकार तिस का नाम सुनोति  
 रधार राषपं जावे किले आन तिस के लडुः  
 सात बनाव मंत्र पठै उपर दश बार लडु दश  
 गरलेय छुवाय हांडि विच लडु ले धरैः उत के  
 उपर दिवा करै पछु मदिश हांडी ले जाय जल



बा०  
४४

के उपर देहतीराय मंत्र पठै ताहि दशवार वा  
लरोग जो तुरत निवार अथ मंत्रः जैत मो आ  
देशागुरु को जैत मो हनु मंताय महा बल वंता  
य सीताशोक निवारणाय लंका दहन कारण  
य मम बाल कर दणाय मसाण क बडे फ काई  
इत को रक्षा करै अजनी माई शब्द शाचा पिंड  
काचा फरो मंत्र ईश्वर महा देव काचा चा फुरः  
मंत्र जजप होर सिद्धि कर कर के हजार १६ फे  
र जाडा देय पुनः ओय द दोहा गज निष्ठा को  
ल्याय कर ता कार सक ठवाय तुरत दिजीये  
बाल को सकल कं बेडे जाय पुनः चो० काक  
डा सिंगी तुरत मंगाव ताही बरोबर पत्नी सजो

रामः  
४४



पाय पीपलपीससह तमैपावै ताउपरयावा  
 तविचारै देयसभिवातककोजाय सकलरो  
 गहितमैमिरजाय दो० पीपलदाडिआनकै  
 बडदाडिवित्पाय कालिमिरचागेरकैतोही  
 समरगदाय उरमजोकरकैदिजीयेजनवाल  
 ककोप्याय भौधन्वंतरइणायकीवालकरो  
 गनसाय जो० धवलीताहोघुघुचील्यानः  
 जोषककोडाजडमंगवाव तामधगोंदरजनी  
 समकठी सहतसंगहीबोंधोवटी निराधार  
 तीवालचदाव तनकोरोगतुरतमिरजावः  
 इतिकेवेडेउपावसंशर्णा अणअहवर्षपर्य  
 तयोडशवर्षलोओषदीउपाव दो० पाआण



बा०  
४८

भेद होर जाय फल तंदुल जल सो प्याव रुधिर  
यं भैत त काल ही बहु सुख बाल क पाव बिल्व  
कथ पुन धातु की अज मोदा कल क करेयः  
अतिसार छिन्न मै सिटै अति सुख पावै देह चो०  
का कडा सिंगी मोये आत ता के ही सम सहत  
उठात चूर्ण करै सहत मै डारै बाल चटा य स।  
भिदुष हरै अथ बाल क छरटिका उपाव दो०  
मोये कडु इलाय चीदि जै सधु मै सात तुरत  
चटा वै बाल को होत रोग को हान पुनः छर्दक  
मलक्षण चो० ताप होय पुन उदर अफारा प्र  
ल होय अतिसार विकारा उदर क्रम जाणो तु  
म सोय छर्दक मल छन है जोय उपाव बाय

रामः  
४८



बिडंगसिंधाजनधार कचेलाहरडैलेनिरधा  
 र गोतकसोपीनैये सभाहिकसकाताशकरे  
 य अतारकीजडकाकाठाकरेय गेरकंसे  
 लाप्यावैतेह राजकोकडुधायदिततीतक  
 हैधन्वेतरहोयकमहीत नचलेमिरचसाय  
 जोप्याव तुरतकिरसताहरतसाय इतिकसी  
 रोगः अथबालककीअडकीघुटी लौंगहो  
 रकसेलाल्याव बापबिडंगइद्रजनधारनि  
 सोतजोतकुराहरडैजान जीरास्वेतजोपोप  
 लमान नचयेंतीजोसुहागाल्याव संचलस  
 मुद्रजागलेपाव सिंधाहोरकचनरामंगाव  
 जौवहियारताकेसध्यपाव टंकचोडेकीवि



हात्पाव ताहीरह्यावैधुटिनतानै टंकटंक  
सभजीतसप्रमाण धुटिदेवातककोछाण  
उद्रविकारसकलामिटजाय पेटअफारातुर  
ततसाय इशधुटिकायेहिअमाण सर्वरोग  
कीहोवैहाण इतिवातकधुटि अणवात  
कतेत्रपरअंजन फटकडोभंलीमासाएकः  
एकमासाएकफीसकोदेख गोघृतजीतनेः  
मैसतजाय लोहिपात्रमारयरगडाय रगडत  
रगडतहोवैस्यास चोपडतेत्रहोवैआरासः  
सकलतेत्रकीपिडाजाय करुणोधन्वेतरये  
हीउपाय इतिआखअंजन चुल्हेसटीआ  
नकैतेलबुंददेडार पीसकरोरेविचमैलक



डीवोंसकीडार कोशीमैरगडैउसैतीनदिताप  
 रवानाचोपडनाललेपुष्टपरहोतरोगकीहान  
 अणबालकभेदसैकी० कश्माविष्वादायनि  
 डंगी पुननेत्रवालाकाकडासिंगी गुडजोमेल  
 सुपारीलेह भेदजायसुषपावैदेह दो० विष्वाः  
 व्याघ्रीसतरादायसीपत्रतमाल इन्काचूर  
 नकीदीजीयेहोतरोगभेदटाल अणभंधपर  
 गुटिकाः चो० अभयानागरमोषाजान गुड  
 गुटिकापैसापरवान दोयदिनाजेनटीषायः  
 भेधरोगसभदुरतसाय पुनः नासपालचुले  
 कीमही अजनायाणहोरहरडैछोटी गेरसुहा  
 गाताहारगडाय राडऔयदिसभछाणवाय



जा०  
५१

सीलगरसवालकोप्याय तुरतसंदतनकीसि  
टजाय परिहासछंद नालिसपत्रजोसिरचवि  
श्वालीजोयेक पीपलमाजसभतैभागचार  
जंदीजोये पीपलतैआठगुणाशर्करापाइये  
टांऊतीनपरवानजोचुरतठानीये टांऊतीन  
परवानजोचुरनभेलीये कौससौसकानाशरु  
धापुनबहुकरे संग्रहतीपांडुश्रीहाहारजव  
रकोहारै चो० लवंगजो कसमाजोराखेत पीप  
लमाजाइतीसमेत पलजोदाडमसिरचमिला  
य पलजोचारसुंठभीपाय सभहीसममीअिले  
य चूरनकरकेआतहीदेय सौसकौसफलीअ  
रुचनसाय संग्रहणीवालककोजरजाय का

ल

रसः  
५१



सपरदोहा भक्षणकरनां बल को सौं महेर पर।  
भात को सखई का नासही करै तपी परका सही पा  
न इति बालक मंदे अथ बालक को ही का उ  
पाव दोहा कण आनण सुठ समी मी प्रिमधु  
सो पाय ही का सौ सत हिरद उत्तम ये हि उपाव  
नागर गुड सौं **कूट** कै जो नरये ही तले ही ही का  
सौ सपुनी को सही सभ का नास करे ही जो०।  
मध्य पौत ही का नर हाय धर्म पात से ही चक  
जाय मरपंथ धर्म के राय तुरत होय ही च  
की हान अथ जो स बालक को स्वर भेद हो जा  
यति सा उपाव परिहाइ चक जो चीता आन  
कै आसल वेद ही तेत डी कपुत आन कै जीरा



बो०  
पर

हो

पानस्वेतही जेशलोचनपुनलेहीजो चीत्ता  
हारतालोश सभसमहीकरवाइयेकपडछाण  
योगीस जो० गुडजोचरनमेलाएह पत्रतमाल  
लायचीदेह गुटिकायायसबेरातीन सुतजोः  
भंगइतसौहीन दो० कणाचदेडासिंधवासीन  
लजलसोलेय दिनचौदा१४ तगयाइयेस्वरका  
भंगसिंटेय हलदीपोपलमिरचगुडसीरसोंसिं  
धाचर॥ तिरणोजलसोपीजीयेस्वरजोभंगहोदू  
र अभोपपयसोपीजीयेदेकदिनसोत स्वर हांक  
जोभंगइतसैमिटैकरहोनेअइहभोत इतिस्व  
रभंग पुतः अरुचीउपाच दो० त्रिकारजनी  
तफलाचरणसधुकेसंग सातदिनतगदीजी

रामः  
पर



ये अरुची जायनिसेंग पीप्यलो एक सत्रलो ये जी  
मिरञ्ज जो दोसै मेल भीष्मि सस करलो जी ये च  
रणा सस कर मेल टोक दोय परभात सस जो तरई  
शकोयाय अरुची जाय मुख सुद्ध हो नै घदीयो भ  
ताय पुनः उपावः चो० तृकूटा दूध जल जो।  
पीव सरदि मिटै सुख पावै जीन नवन तत्र फला य  
सोदय वायु वसन काना शकरेय पुनः वायु  
हृद परः श्रीन टोक जयः जी ये सिंधा एक मिला  
य तीन बार जो पी नै याही वायु हृद सभी मिट  
जाय अणपी न हृद कथन दो० चंदन अस्तः  
स प्रमाण घसिरं जु औ नली आन मधु के संग जु  
पी जी ये पित हृद की हान चो० तृफला भेजि



लोयपटोल कायकरोस्तद्रासैघोल पीतजम  
नतनयांसीजाय जेकाठाकरपीनैताह पौन  
करहुदेहोयहीनाश काठाकरपीनैजोजास  
दो० पीतपापडासहतकर कायकरसहतसंग  
जोयाय रुदेदाहत्तस्माहटेनरुदीदीयोभता  
य कणावयेनतिनघनसिमपणफलसेल  
चरनकरकैफाकियेपीतजमनकोटाल तफ  
लासुठविडंगसमफाकिमधुसौलेय ज्ञेयम  
रुदिंकाताशहो नरुसुखपावैदेह आधमास  
मधुसंगहीतीनटंकजोयाय रुदिंज्ञेयमाता  
रहे नरुसुखपावैदेह धमासासधुकेसंगही  
तीनटंकजोयाय रुदिंज्ञेयमातारहेकंडुहीसि



टजाय संचलजीराशर्करामिरचसंगजोया  
 य सर्वहृदि कानाशहो हृदयफलीमिटजायः  
 अथविदोयहृदपर कस्माजो कपीहृदिपुती  
 तंदुलपुलिआण मायौमधुसंगपीजोयेहेत  
 हृदकीहान पुनःयथा तृकुटाधनेहलाजीरा  
 समकरदोय दौद्रासंगलेचाटियेहृदिदूरस  
 भहोय छिन्नाअभयामिरचफलकणांमाय्यो जो  
 नात लेपकरैदिनतीनहीममनजायततकाल  
 जो० लघुइलायचीमोथालौंग तासमकडु  
 इलायचीसंग चरनकरसंगसहतचदाय ता  
 तैरोगहृदिमिटजाय इत्यौषधिसमाप्तं अथ  
 मृत्तवत्साजं ध्याप्रयोगः सप्तमासतथाअहं



भा०  
५४

खंडयेत् गर्भनारिणो द्वादश्या संजीवे द्वात्तस  
नालमृते जलसौ कामहास्यं समहा जलं प्राप्नः  
एचमसासकं योगतो चम गृह्यत चक्रं साधोति  
तिसकावालात् जीवते अथ उपानः दो० म  
पुत्रयके जप करो करे ते तीस हजार ३० सातना  
जका पूतला सात मे खले जाय कौशी पात्र में गा  
यकै उसमें घृत भराय माती बरोबर बरखले उ  
सको देत हठाय चौसठ दीपक पात्र में उड्ड  
वा कुलीपाय नख उतारै तारके दी जैता हिनु  
वाय सातना जक ठाकरै हरदिता हा मिलाय  
मलो उबना तारके उपर फेर नुवाय करो पूतला  
फेरतु मदि जै बरख उठाय धरकै सहन क बिच

ताम  
५४



मैता सिंदूर गिराय चौ सट दीपक जाल कै नारी  
 देह रुवाय जप मल्लुं जय संकल्प कर दिजती  
 सहजार ३० पिछै पूतला ठाय कै संजय टै सोवा  
 २९०० जाय चराह गाडी ये ले पूतले को स्यामः  
 फेरग भई जैन हिमरै तनाल क एक महादेव  
 रक्षा करै तिष्ठै कर मत्त टेक दो० पाति नतास्य  
 ति वीस कीः इकी शकुने कातीर फल सातण  
 रकार के संजय ठो मत्त धीर उस मै नार नुवाइ  
 ये ति चै यं जति बाय य जति खे पट ताल कै  
 उपर नार नुवाय बठाय ताहि नुवाव उठाइये  
 श्री फल गोदि विन्न सुत जी वै आ युव धै जाय  
 दुःख महा ही नीच दो० यं ज जोति चै रायीये



बा०  
५५

वसन्तलाललिरववाय फेरजीवैवालकसक  
लनहिमरैसतभाय इतिवंध्याप्रयोगसंपूर्ण  
ओंह्रीह्रींओसीतलेजगतमातायकुरुकुरुह्री  
स्वाहा इतिमंत्रः आयुतेजपेतसिद्धिप्रथमपा  
ठपञ्चाज्जपेकुर्यात् सीतलाप्रसन्ते ओंअदे  
त्यादिऽसुकगोत्रोत्पन्तोहंअसुकनामशर्मणः  
मिस्फोटकनाशने सकलउपद्रवनाशनेमम  
वालकशान्त्यर्थेअष्टोत्तरंजपमहकरिष्येत् । सत  
१०८सतजपे माससातनारहोजाय गर्भपिडता  
होअधिकसुहाय महाकषयावैजोदार तासु  
षकारणयेउपगार कौंचगिरुजामणजडत्या  
मीप्रितासमहेरसिलाच रातसिलासीतलज

रामः  
५५




लपोस दुग्धसंगपोनेयोगीस पीजततारसभ  
दुखनशाय गर्भशूलहितमैमिटजाय दो०  
रंभाउवाच मासआठवांजनलगैतारितनहोश  
ल तातनपोडाभगर्भकीतिंयकोशूलपरवानः  
धन्यंतरउवाच ताओयदजोकरैतरनारसु  
मपावैदुखनासअधारगजपीपलहोरधनी  
याआन मालाताहोगेरमधसान सीतलजल  
सोंगैरैताहाय दुग्धमाहीजोदेहपिलाय ताको  
पिननारसुखहोय यामैनाकदुरहालकोय  
इतिश्रीबालचक्रिस्त्याप्रणमासतथादिचसतथा  
मास१२दिनमेंजवलीतथाषोडशवर्षसर्वमसा  
णमेंजयेजतेजगाडासमाप्तम संवत् १८४८



श्रीगणेशायनमः बरुणोवाच बवर्णराजा  
नएछाहैहेमाहाराजजी इशाय नमः औसावि  
चारहकेइश्रीबंजाक्युहोजातिहः रावणोवा  
च इशवातकायेइअयो जतहैः केइश निमा  
रिसैः इश्रीबंजाहोतीह केअथसतोयेहः केव  
चेदानडलयाहोजाताहः दूसरवचेदानमः  
० पवनपूर्वकहोतीहः तीसरः वचेदानमः  
वृद्धमासफलजाताहः चौथः वचेदानमः  
कीडापडजाताहः पांचवैवचेदानमः चरबी  
भरजातीहः बछठः वचेदानमः सरदीभरजा  
तीह सातवैवचेदानमः भूतः प्रेतहोजाता  
हः बरुणोवाच हेमाहाराजजी येहः नातीः



किस तरों जानी जाती है: और इश की औष  
 दी क्या है: रावणो बान्ध इश बान्ध का यद्द वि  
 चार है: के जन्म आदमी बैठा रह अकल का:  
 ख्याल कर: फेर बयार स: भोग कर क दूर हो उ  
 स वक्त व पर को पूछ: के तेर: की सी थोड़ सभ  
 अंग स: पी डरु या नहि है: बिहार कर क: देख  
 किसी थोड़ कुछ दर्द हो जाह: तो जाण व ज्ञेय  
 न  उलटा है: और उस का यद्द अलाज है:  
 बिदाणा छ मासे पिता मुर्गा का छ मासे पानी  
 म: रगड क: तीन बलौट कपडा तर कर तरक  
 रके उस कपडे कि बनी बलाव कर क पोच  
 सात फेरि इखी के शरीर स: न्हाणे स: पीछ: पाँच

बी



चारदिनयुंदिकर श्रीरामकी दयासगर्भ हैः१  
 और जो कह मेरा शरीर के न बन हो ताहः तेजाण  
 लेन चेदा नमः वायु भरगईहः उपावहीग औ  
 र तोलों की बराबर ले जिस प्रकार पीछेः कहरः  
 उस प्रकार करः और जो कह के गरदन नमः पीडा  
 होतीहः तो जाण लेन चेदा नमः लक्ष्मा सबध  
 गयाहः उपाव जीरास पेद सात मासे माज मा  
 से पौंच हाथी के नख नती न मासे सिर सों का  
 तेल नती न मासे जीस प्रकार कह हार उसी प्रका  
 र करः और जो कह मेरी पिंडली दर्द करतीहः  
 तो जाणः कब चेदा नमः कीड़ा पड़ गयाहः उ  
 पाव जी खार पौंच तोले साबूत पौंच तोले व



डीहरडदेतोले पानीमः मलाकरउसीप्रकारः  
 करः जोपिछे कहाहः आसणा भोजनकरे औरः  
 जो कहः पसलीमः पिडा होतीहः तो जाणाले वचे  
 दातमः गरमी भरण ईह उपायः गध्री का दूधः  
 तो न तोले सहत देशवाली एक तोला जिस प्रकार  
 रापिछे कहाहः कैरैः और कहः के मेरि छाती पीडा  
 करतीहः तो जाणाले वचे दामः सदी भरण ईहः उ  
 पायः पिता मुर्गे का सात मासे पीपला पौंचमा  
 से शकरती न मासे केशरती न मासे पानीमः र  
 गडकः जिस प्रकार पिछे कहाह उसी प्र० और  
 कहः मेरे को कही पीडा नहि होतीह तो जाणाले  
 आसे व भरत पाजिकाहः जंतर लिख कर गले



नो०  
५८

न

नो धैः तो आशे बर हो जावः और जो दूशराः  
प्रकार जाणोः जो चार के दिमांदा हो जाव यह  
दिन शनि को हः एक देव सात पण्यो तो न दिन  
बुरे हैं यह लो सिरमः दर्द होता हः दूशरः  
तप जो डे का तो सरः तप दर्दः छाती  
काः चौथ पणः रुड फ टणीः  
पौच व प स ली सः दर्द होय पौ  
च दिन भारि हैः जो जे त्र न हिर ख ता हः  
उस कामः दुख प्राप्ति कर दे ता हः और मेरी प  
ह व लि हः व नौ ले स वा मरिः क सं भे स या गे हः  
म रंग ले और एक मुठिः पी ले रंगः और आद  
मरिः स्या म रंगः और एक आदमी की खोपरीः

ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ

एस  
५८



लेवः उड्डके आटे को दिवा गुड का घोल औ  
 र उसी आटे में गुड मिलाकर पाँच मूटिके पाँ  
 च गोले बनाकर एक लोहे की मेथले सभची  
 जा एक कचोड़ी सा धारक दो वा वालक एक  
 तागा उसी लीका उस लोड़ी के मुह पर बाँधले  
 विमार के शिर पर नारक फिर यह कला मपठः  
 फिर चार राह सगाड आव १ और जो आदित्यः  
 वार के दिन मोदा होय उस दिन असेवन यतः  
 को होवहः दिन सूर्य काहः पहल १ सिरसः पी  
 डा होय र दूसर जी गरम दर्द होताहः और पेट में  
 दर्दः हाडों में दर्दः सर्व शरीर में दर्दः वरुणा नश  
 वाणसः काहाहः केनाम इश देव का खरतीव



वा०

५२

ह= और यह साथ चड़े लोकी रह और बहुत सा  
 लावाले पुराणे बहुतो सरहा करता ह= नली झाकी  
 यह ह= बकरी का मास सात पुडीया खस बो दार

कुल	हो	अला	अहद	अला	अस्मद	लम	यलद
हु	अला	अहद	अला	अस्मद	लम	यलद	वलम
अला	अहद	अला	अस्मद	लम	यलद	वलम	यलद
अहद	अला	अस्म	लम	यलद	वलम	यलद	वलम
अला	अस्म	लम	यलद	वलम	यलद	वलम	याकुन
अस्म	लम	यलद	वलम	यलद	वलम	याकुन	अल
लम	यल	वलम	यलद	वलम	याकुन	अल	कफव
यल	वल	यलद	वलम	याकु	अल	कफव	अहद
यह कलास सर्व वारों के रोग न हाने कह नो मे पट=							

राम= ५२



सात ब्रह्मो की पाती वीडा १ सात तरो की लपसी ए  
क कुज्जा दहिका एक मुगी का बच्चा एक मुठी उ  
ड्ड की दाल गी हंके आटे का दिवा सभ चीजाः  
मटि की रका विमा धरः जा हों व हुत व द हो चले  
ते पाणी पर धर आवै जवी विमार को फायदा हो  
जाव और दिन सोमवार के सोंदा होय यह दिन  
देवगरे वखान का हू गोरिस्तान का हूः पहल शि  
रपी डा हो तप जा डे का सख ही न नौ दना आवः  
और पाव सेरमा सब करी का एक गज कपडा मैः  
बांध के चार राह से रख आव लड्ड १० बाडोः  
सख आवै फायदा हो फट बाँदे और जो दिन में  
गले सोंदा होय देवनः कहाना म मेरा जलख हूः



और उपर कुवेके मेराम कान्हः यापुराणे बाग  
मः जाहा तलाव हो जो कोई का नव दन को पता  
हः शिर भाहि पीडा हो पौ न पिंड लो स पीडा करता  
हुं मुख भारिर है न लो मेरी यरु स्याम न लो ले स  
ना मुठिः हाइ मुठि स पेठ गी हुं के आटे का दिवा  
गुड के धीव का दोह डिया आदमी की सवा मुठि न  
लो की दाहा स भउ समा पावे फेर सात बारि कुल पठः  
चार अडो रात गयो विमार के सिर पर को बार कर कु  
वै पर धर आव और कुवे का पाली लावे की ससे  
वात ना करै पाति विमार के मेज पर आस पास हि  
डदे आराम होः चार फेरि कुल पठः और जो दिन  
बुधवार के सो दाहो देव नः कहा ना स मेरा गोल



वषावानहः उजडहवेलीमारुताहुं मैःआद  
 मोकेशिरकोचरकदेताहुं डालआतीहःसिरमः  
 पीडदस्तहोतेह मेरिवलीयेहः आदमोनकरीकी  
 अडिया आदमशिरकेबाल कपडाऔरतकेफ  
 लोकाआटेकादिवा एकप्यालेसःधरकःपुराणेघ  
 रउजडमःकाडःतीनदिनदिवाकुचेपरबाल पंच  
 आक्षणाजमावे जबीआसमहो औरजोगुरुदिन।  
 मोदाहो देवनकहामःचुल्हेपरहरदिवाशबठा  
 रहाताहुं तपजाडेकारुडफटणीकडवासुषकर  
 करदेताहुं मेरिवलीयेह वनौलेकालेसवामृटिः  
 सवामृटिपीले चारोटियों सातदहोसरवतकी  
 कुजीयोभरकः औरचारगुडोयाएकरंगकी सात  
 गुडियोंसातरंगकी एकदिवाधोका रकावीसथर











